ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 15 मार्च 2020

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 15 मार्च 2020 से 21 मार्च 2020

फाल्गुन कृ. – 06 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 11, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 196 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी.सी.डी.ए. कटक में आशीर्वाद समारोह

डी.ए.वी.सी.डी.ए. कटक के प्रांगण में दसवीं और बारहवीं कक्षा के विद्यालयों के लिए आशीर्वाद समारोह पर हवन का आयोजन किया गया। इस आशीर्वाद समारोह में 19 हवन कुण्ड़ों में 800 विद्यार्थियों एवं 225 शिक्षकवृंदों एवं विद्यालय के अन्य कर्मचारियों के द्वारा संपन्न किया। वेदमंत्र एवं ओंकार ध्वनि से विद्यालय का प्रागंण गूंज उठा।

डॉ. प्रियव्रत दास ने ओंकार एवं गायत्री मंत्र का महत्त्व बताकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया एवं प्रतिदिन गायत्री मंत्र पाठ करने की एवं ओंकार जाप करने की प्रेरणा दी।

श्रीमती शन्नोदेवी ने गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ यज्ञ कार्य सुचारू रूप से संपन्न किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती नमिता महान्ति ने मुख्य अतिथि तथा उनके सहयोग का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया और बच्चों को आर्य समाज के पावन नियमों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बच्चों को यह समझाया कि वे अपना आत्मविश्वास जागृत करें, ईश्वर की आराधना करें, माता–पिता एवं गुरुजनों का आशीर्वाद लें एवं तनावमुक्त होकर परीक्षा दें।

यज्ञ समापन के बाद ओड़ीशा आर्यसमाज के अध्यक्ष वेद विद्वान प्रियव्रत दास, वेद विदुषी शन्नोदेवी, विद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती नमिता महान्ति, आचार्य प्रशांत दास, आचार्य सस्मिता दास एवं शिक्षक वृन्दों ने बच्चों पर आशीर्वाद पुष्प वर्षा करते हुए परीक्षा में सफलता हासिल करने के लिए शुभेच्छा प्रदान की। अंत में भक्तिपूर्ण भाव से यज्ञ प्रार्थना की गई एवं यज्ञ प्रसाद सभी में बाँटा गया।

इस समारोह में एस.टी.एस्.ई. में उत्तीर्ण विद्याथियों को सम्मानित भी किया गया।

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर में ऋषि जयंती पर यज्ञ का आयोजन

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन के छात्रावास में, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर यज्ञ का आयोजन किया गया। अध्यक्ष, स्थानीय प्रबन्धकत्री समिति तथा प्राचार्या द्वारा यजमान की भूमिका निभाई गई।

प्राचार्या डॉ. वालिया ने इस अवसर पर छात्राओं को अपने सम्बोधन में कहा कि आज महर्षि दयानंद इस डी.ए.वी. के हृदय् स्थल में सदैव प्रकाशित रहेंगे। इस समाज को श्रेष्ठ बनाना उनके जीवन का मुख्य मन्तव्य था। आज प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह वेद तथा स्वामी जी की बताई राह पर चलकर स्वयं भी श्रेष्ठ बने तथा एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण करे। स्वामी जी द्वारा स्त्री शिक्षा की वकालत की गई। आज उसी का फल है कि हम इस संसार में अपने पैरों पर खड़े हो जीवन की मुश्किलों का सामना करने में सक्षम हैं।

श्री इन्द्रपाल आर्य ने अपने वक्तव्य में प्राचार्या को इस वैदिक हवन के लिए

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

अबोहर में हुई टाटा बिल्डिंग निबन्ध प्रतियोगिता

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर में टी.सी.एस. द्वारा टाटा बिल्डिंग निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में विद्यालय के कुल 204 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा के मार्ग दर्शन व निर्देशन और पाठ्य सहायक गतिविधियों की प्रभारी श्रीमती आदर्श जैन की सुपरविजन में आयोजित इस प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका श्रीमती बिंदु चावला व श्रीमती सरजू मिगलानी द्वारा निभाई गई।

प्रतियोगिता के घोषित किए गए परिणामों में जूनियर वर्ग में कुमारी अर्शिया ने श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब प्राप्त किया। मास्टर वंश हांडा ने रनर अप रहते हुए प्रथम स्थान व कुमारी अनाहद प्रीत कौर ने रनर अप रहते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में मास्टर गर्व अरोड़ा ने श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब प्राप्त किया। कुमारी रीतिका सिडाना ने रनर अप रहते हुए प्रथम स्थान व कुमारी अभ्या खुंगर ने रनर अप रहते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 15 मार्च 2020 से 21 मार्च 2020

बड़े-छोटे सबको नमः

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।
ऋग् 1.27.13

ऋषिः **आजीगर्तिः शुनः शेषः।** देवता **विश्वेदेवाः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**महद् भ्यः नमः**) [ज्ञान और गुणों में] महानों को नमः (**अर्भकेभ्यः नमः**) छोटों को नमः, (**युवभ्यः नमः**) युवकों को नमः, (**आशिनेभ्यः नमः**) वयोवृद्धों को नमः। (**यदि शक्नवाम**) जहाँ तक [हम] समर्थ हों (**देवान्**) विद्वानों को (**यजाम**) सत्कृत करें। (**देवाः**) हे विद्वानों! (**ज्यायसः**) अपने से बड़े के (**शंसं**) स्तवन को [मैं] (**मा आवृक्षि**) न छोडूँ।

●मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े छोटे सबको अभिवादन करता हूँ; कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से 'नमः' करता हूँ। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदय-ग्राही और उपयुक्त है। जब छोटे बड़े को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक-दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े-छोटे सबके प्रति कर्तव्य-पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर-नारियों! हे उपदेशामृत-वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरों! हे जनता-जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरुषों! 'तुम्हें नमः'। हे निश्छल भावभंगियों और बाल-क्रीड़ाओं से मन को मुदित करने वाले अबोध शिशुओं! हे अल्पवयस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियों! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प-बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह-सत्कार दूँगा, इनकी सेवा करूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु दर्शन

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि मन एक मन्दिर है। मनुष्य को यह इसलिए नही सौंपा गया कि वह इसमें भय, चिन्ता, निराशा, ईर्ष्या, द्वेष और नीचता के विचारों का कूड़ा-करकट जमा करता रहे। मन का मन्दिर तो सदा पवित्र रहना चाहिए। इसको प्रसन्नता, आशा, निर्भयता, प्रेम, उत्साह और इसी प्रकार के ऊँचे उल्लास-भरे विचारों के पुष्पों से सजाना चाहिए। यदि भक्त खाता-पीता और खुशियाँ मनाता है तो समझना चाहिए कि वह यज्ञ की 'उपसदा' को पूर्ण कर रहा है। जब प्रभु-प्रेम का पात्र बनने के लिए दृढ़ संकल्प कर इसी मार्ग पर हम चल पड़ेंगे, तब समझ लीजिये कि प्रभु-दर्शन की पक्की नींव पर आप अचल खड़े हो गए हैं। आप निःसन्देह साक्षात् दर्शन पा लेंगे और कोई बाधा आपके मार्ग में खड़ी नहीं होगी। यदि बाधाएँ आयेंगी तो आप उनपर विजय प्राप्त कर लेंगे। निश्चय रखें, आपमें बहुत बड़ी शक्ति छिपी हुई है। आप स्वयं ही अपने-आपको पूर्ण अधिकारी बनाने के योग्य हैं। अपने संकल्प को निर्बल न होने दें। अपने-आपको तुच्छ न समझें। ***–अब आगे...***

ओ३म् उत्तिष्ठ प्रहि प्र द्रवोकः
कृणुष्व सलिले सधस्थे।
तत्र त्वं पितृभिः संविदानः
सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः।।
अथर्ववेद 18।3।8।।

तैयारी

प्रभु-दर्शन की नींव सत्य, शिव और दृढ़ संकल्प से रख दी गई; परन्तु केवल नींव ही से तो कार्य सिद्ध होता है। अभी क्रियात्मक रूप से इस प्रकार का जीवन बनाना होगा, जो कि वास्तव में प्रभु-दर्शन करा सके। कई सज्जन कहते हैं कि 'बड़ी प्रबल इच्छा, अटल निश्चय और दृढ़ संकल्प से बैठते हैं कि मन को एकाग्र करके भगवान् के दर्शन पाएँगे; परन्तु कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। निराश होकर उठ खड़े होते हैं।' ऐसे भक्तों से मेरा निवेदन है कि मन की एकाग्रता केवल एक स्थान में बैठकर आँखें बन्द करके ध्यान लगाने का प्रयत्न करने ही से प्राप्त नहीं हो सकती। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए पहले कितनी ही मंज़िलें तय करनी पड़ती हैं। दृढ़ संकल्प की नींव रखने के पश्चात् मनुष्य को अपना 'मनुष्य-जीवन' बनाना है। मनुष्य को मनुष्य-जीवन' बनाना होता है, इसका क्या अर्थ है? अर्थ यह है कि मनुष्य में मनुष्यत्व पैदा हो जाए। वह जड़वत् और पशुवत् न बना रहे।

प्रभु की इस अद्भुत सृष्टि में लाखों योनियाँ हैं- पशु, पक्षी, जल-चर, भूचर, नभचर, कीट-पतंग इत्यादि। इस सारी सृष्टि में प्रभु-दर्शन का अधिकार केवल मनुष्य को ही दिया गया है। अब यदि मनुष्य मानव का चोला धारण करके पशु या अमानव बना रहे तो केवल इस चोले के कारण उसे प्रभु-दर्शन नहीं हो सकेंगे। इसलिए मनुष्य को मनुष्य बनना होगा और मनुष्य भी आर्य मनुष्य, दस्यु नहीं।

महाभारत के उद्योगपर्व, अध्याय 34 में आर्य की परिभाषा की गई है-

न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तं न दर्पमारोहति नास्तमेहि।
न दुर्गतोऽस्मीति करोत्यकार्यं तमार्यशीलं परमाहुरार्याः।। 112।।
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः।
दत्त्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुतापं स कथ्यते सत्पुरुषार्यशीलः।। 113।।

"जो शान्त हुए वैर को नहीं चमकाता, घमण्ड में कभी नहीं आता, तेज से हीन नहीं होता और विपदाएँ झेलता हुआ भी अकार्य नहीं करता है उसी को, आर्यपुरुष आर्यशील कहते हैं।। 112।। जो अपने सुख (ऐश्वर्य) में फूल नहीं जाता, दूसरे के दुःख में जो प्रसन्न नहीं होता, दान करके पीछे पछताता नहीं, वह सत्पुरुष आर्यशील कहलाता है।। 113।।"

यहीं गुण मनुष्य में हों, तो मनुष्य कहलाने का अधिकारी हो सकता है। वेद भगवान् ने मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए जिन नियमों का आदेश किया है, उसमें से अत्यन्त आवश्यक ये हैं-

1. **उषाकाल से पहले उठो!**

सबसे पहला आदेश यह है कि मनुष्य सूर्य तथा उषा से भी पहले निद्रा त्यागकर उठ खड़े हों। उषा उस ज्योति का नाम है, जो सूर्य उदय होने से पूर्व फैलती है। अथर्ववेद (10।7।32) में यह आदेश है-

नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषसः।
यदजः प्रथमं संबभूव।।

"सूर्य से पहले और उषा से पहले नाम को नाम से (उस ईश्वर को) बार-बार पुकारों, जो अजन्मा है और पहले ही प्रकट है।" मनुष्य को चाहिए कि वह उषा से पहले उठे, भगवान् के नाना नामों से उसे स्मरण करे। उषा देवी की बड़ी महिमा वेद ने गाई है। ऋग्वेद में लिखा है कि "रानी उषा

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

प. गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्य तिथि के अवसर पर

चन्द्रमा पर जीवन की तलाश–वैदिक प्रमाण

● डॉ. महावीर मीमांसक

प्रस्तुत विषय पर शतपथ ब्राह्मण में यास्काचार्य ने निरुक्तशास्त्र की निर्वचन पद्धति की शैली पर 'वसु' शब्द का निर्वचन देते हुए लिखा है **"एतेषुहीदं सर्व वसु हि तमेते हीद वासयन्ते, तद्यादिदं सर्व वासयन्ते तस्माद् वसव इति"** (शत. का. 14)। अर्थात् इन (ग्रह उपग्रह आदि) में ये सब पदार्थ (प्राणी भी) बसते हैं ये सब (पदार्थों प्रजा आदि) को (अपने पर या में) बसाते हैं, क्योंकि ये सबको बसाते हैं अतः इन (ग्रह आदि) को वसु कहा जाता है। ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के इस उद्धरण की सत्यार्थप्रकाश के अष्टम् समुल्लास में व्याख्या करके एक अत्यन्त वैज्ञानिक टिप्पणी करते हुए लिखा है "जब पृथ्वी के समान सूर्य चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्य आदि सृष्टि से भरा हुआ है, तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे?" ऋषि दयानन्द ने चन्द्रमा (आदि) पर प्रजा होने की बात सन् 1857 में कही थी, इसी अभिप्राय की बात (टिप्पणी) आज सर्वप्रसिद्ध सृष्टि विज्ञानवेत्ता स्टीफन्स हाकिंग ने आज से 2–3 वर्ष पहले कही थी कि जब भूमि पर पृथ्वी पर डी.एन.ए (प्राणियों क उत्पत्ति का मूल बीज जिससे सब प्राणी पैदा होते हैं) हो सकता है, जो चन्द्रमा पर डी.एन.ए. क्यों नहीं हो सकता? ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के उपर्युक्त उद्धकरण को एक प्रश्न के उत्तर में दिया है। प्रश्न था, "सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं, और उनमें मनुष्य आदि सृष्टि है या नहीं?" इस प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने जो लिखा वह चन्द्रमा पर मनुष्य जीवन की खोज में लगी आज की अमेरिका की संस्था 'नासा' (NASA) के लिए एक मार्गदर्शन भविष्यवाणी है। ऋषि ने उत्तर दिया, "ये सब भूगोल लोक? और इसमें मनुष्य आदि प्रजा भी रहती हैं। "?

चन्द्रमा पर जीवन की खोज में लगे 'नासा' ने चन्द्रमा और अब अपनी पानी (जल) को खोजा है, जो जीवन का मूल आधार है। किन्तु चारों वेदों ने चन्द्रमा में जल की विद्यमानता आज से लाखों (अरबों) वर्ष पहले बतला दी थी।

चन्द्रमा पर जैविक सृष्टि के मूल आधार जल (पानी) के होने के प्रमाण हम विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से प्रस्तुत करते हैं, वेद भी एक से नहीं अपितु चारों वेदों से। मंत्र निम्न प्रकार से हैं:–

सामवेद पू. 5.1.3.9 में यह मंत्र ज्यों का त्यों दे रखा हैं अथर्ववेद का. 18, सू. 4. मं. 89 में भी यह ज्यों का त्यों विद्यमान है। यजुर्वेद में इस मंत्र का प्रथम चरण ज्यों का त्यों मौजूद है किन्तु दूसरे और तीसरे चरण में अन्तर है। यजुर्वेद में यह मंत्र निम्न प्रकार से है:– **चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णोधावते दिवि। रयिं पिशङ्ग बहुलं पुरूस्पृहं हरिरेति कनिक्रदत्।।** अध्या 33. म. 90 ।।

यहाँ हमारे मंत्र का विचारणीय चरण प्रथम ही है जो चारों वेदों में समान रूप से निम्न प्रकार से है:–

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।

चारों वेदों में इस मंत्र का देवता (वर्णनीय विषय) चन्द्रमा ही है। ऋषि दयानन्द ने अपने ऋग्वेद में ऋक् मं. 1. सू. 105 मंत्र 1 पर इस मंत्र के भाष्य में मंत्र के वर्णनीय विषय की भूमिका बतलाते हुए लिखा है। **"अथ चन्द्र लोकः कीदृश इत्युपदिश्यते"** अर्थात् (वह) चन्द्रलोक कैसा है इसका वर्णन (उपदेश) (इस मंत्र में किया गया (जाता) है। सायण, महीधर, उव्वट, वेंकट माधव से लेकर ऋषि दयानन्द तक सभी वेद भाष्यकार इस बात पर सहमत हैं कि इस मंत्र में वर्णन चन्द्रमा का ही है, जैसा कि मंत्र के पठन मात्र से स्पष्ट हो जाता है कि मंत्र में सर्वप्रथम प्रारंभ में पठित "चन्द्रमा" शब्द प्रथमा विभक्ति में है जो आगे पढ़े गए समूचे मंत्रांश का कर्ता हैं **सुपर्णः** (सुपर्णो) चन्द्रमा का विशेषण है जिसका अर्थ है 'सुन्दर पर्णो (पंखों) वाला (यह अलंकार है।) अप्सु अन्तरा शब्द अधिकरण में हैं और यह अधिकरण औपश्लेषिक है अर्थात् चन्द्रमा पानी में डूबा हुआ नहीं है, अपितु पानी चन्द्रमा में सागर के रूप में सर्वत्र व्याप्त है। (यह तथ्य अभी खोज का विषय है)। 'दिवि' शब्द मंत्र में अधिकरण है और 'धावते' का प्रयोगकर्त्ता की क्रिया के रूप में किया गया है। अब मंत्र का अर्थ निम्न प्रकार से बनेगा:– सुन्दर पर्णो (पंखों) वाला चन्द्रमा (जो) पानी में उपश्लिष्ट है (वह) द्युलोक (आकाश) में दौड़ लगा रहा है। यह तो हुआ शब्दार्थ। व्याख्या बड़ी वैज्ञानिक तथ्यों से भरपूर है।

सबसे पहले प्रथम वैज्ञानिक तथ्य तो यह बतलाया है कि चन्द्रमा पानी (जल) से उपश्लिष्ट है। इसके दोनों अभिप्राय हैं कि चन्द्रमा में (चन्द्रमा के अन्दर या ऊपर) पानी है। दूसरा वैज्ञानिक तथ्य वेदमंत्र यह बतला रहा है कि चन्द्रमा आकाश में न केवल गति कर रहा है अपित दौड़ रहा है। चन्द्रमा की गति (दौड़) कितनी है, यह आज का विज्ञान जानता है, लिखने की आवश्यकता नहीं है।

गति (चलना या दौड़ना) के लिए या तो पैरों की आवश्यकता होती है या पत्रों (परों) की। भूमि या किसी अन्य ठोस आधार पर चलने के लिए पैरों की आवश्यकता होती है किन्तु आकाश में गति (गमन) करने के लिए पैर काम नहीं करते अपितु वहाँ पंख (पर) चाहिए। चन्द्रमा की गति आकाश में होती है। किसी ठोस भौतिक आधार पर नहीं, अतः चन्द्रमा को सुपर्ण कहा। पर्ण का शब्दिक अर्थ पत्ता भी होता है। पक्षी या वायुयान के पंख उड़ने का प्रयोग वेद में अत्यन्त सटीक है। पर्ण भी सुन्दर या शोभन हैं, ईश्वर की रचना सुन्दर या शोभन ही होती है, जो कभी बिगड़ती या विकृत नहीं होती।

यह प्रथम चरण चारों वेदों में समान रूप से एक ही जैसा है जिस में "चन्द्रमा" शब्द के एकदम बाद "अप्स्वन्तरा" शब्द है जो सर्वप्रथम चन्द्रमा में पानी होने के तथ्य को दर्शाता है, चन्द्रमा में गति की बात इसके बाद कही है। हमारा मुख्य प्रयोजन यहाँ वेदों के प्रमाण के आधार पर चन्द्रमा में पानी दिखलाना है जिसकी खोज नासा ने अब की है और पानी दिखलाने का भी हमारा ध्येय यही है कि जब पानी है तो जैविक सृष्टि (प्राणी) भी अवश्य होंगे। इसी उद्देश्य को लेकर हम ने यह लेख लिखा है।

जैसा हमने पहले कहा और लिखा कि मंत्र का यह प्रथम चरण चारों वेदों में समान है, केवल यजुर्वेद में इस मंत्र के अगले चरण भिन्न हैं, शेष तीनों वेद ऋक, साम और अथर्व में यह पूरा मंत्र समान है। मंत्र के इस प्रथम चरण की ही अपेक्षा हमें अपने वर्तमान उद्देश्य के लिए है, शेष चरणों की व्याख्या फिर कभी आवश्यकता होने पर करेंगे, जो ऋषि दयानन्द की प्रस्तावना **"अथचन्द्र लोकः कीदृश इत्युपदिश्यते"** की पूरी व्याख्या होगी।

वेद में ओर भी कई मंत्र हैं, जो चन्द्रमा में पानी की विद्यमानता का वर्णन करते हैं या संकेत तो अवश्य देते हैं, जिसके कारण चन्द्रमा को वसु कहा गया है। प्राचीन भारतीय ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथों में भी चन्द्रमा के इस विषय पर बहुत कुछ कहा गया है। किन्तु विस्तार भय से हम और नहीं लिख रहे। नासा ने सितम्बर 2016 को दूरदर्शन पर यह घोषणा करके वेद के वैज्ञानिकता पर मोहर लगा दी कि चन्द्रमा के चारों तरफ सागर है वैज्ञानिक की इस दिशा में आगे खोज जारी हैं

वेदों में चन्द्र विज्ञान के सम्बंध में– चन्द्रमा के सम्बंध में बड़े विस्तार से स्पष्ट वर्णन है कि चन्द्रमा का क्या वर्ण (रंग) है, क्या प्राकृतिक सम्पदा चन्द्रमा में निहित है, क्या वातावरण है? इत्यादि इसरो ने सन् 2018 में मंगलयान–1 पर भेजा, जो बहुत कम दूरी पर अपने स्थान पर पहुँचने के कारण चन्द्रमा के सम्बन्ध में अभीष्ट जानकारी न दे सका। उस समय चन्द्रविज्ञान का वैदिक प्रसंग इसरो को चन्द्रमा के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी दे सकता था। अब फिर भारत ने चन्द्रयान–2 भेजा है। अब की वैदिक चन्द्रविज्ञान इसरो के चैयरमैन और अन्य वैज्ञानिकों का चन्द्रमा के संबंध में पर्याप्त जानकारी देने में सहायता कर सकता है। नासा भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर सकता है।

"वैदिक ज्ञान–विज्ञान से सम्पदा एक झाँकी"
से साभार, मो. 9811906064O

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

प्रभु दर्शन

मनुष्य–समुदाय के लिए चिकित्सा करती हुई काले आकाश में उठ खड़ी हुई है।" ऋ. 1।123।1।।

फिर इसी मण्डल के इसी सूक्त का चौथा मन्त्र यह है–

गृहं गृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादघमग्रमिद् भजते वसूनाम्।।

ऋ. 1।123।4।।

"उषा दिन–पर–दिन सवाया रूप धारती हुई घर की ओर जाती है। यह कुछ देना चाहती हुई, चमकती हुई सदा आती है और कोषों में से आगे–आगे बाँटती ही जाती है।"

इस उषा देवी का स्वागत करने के लिए उषा के आने से पूर्व ही उठ जाओ। यदि उषा देवी आ गई और निद्रा में पड़े रहे, तो आप उषा की देन से वंचित रह जाएँगे। जागो! जागो और भगवान् के खज़ाने से कुछ ले लो! एक कवि ने भी कहा है–

हर रात के पिछले पहर में,
इस दौलत लुटती रहती है।।
जो जागता है सो पाता है,
जो सोता है सो खोता है।।

भक्त कबीर कितनी मस्ती से गाता है–

जागु री बौरी, अब का सोवे।
रैन गई दिन काहे को सोवे।।
जिन जागा तिन मानिक पाया।
तैं बोरी सब सोय गँवाया।
पिय तेरे चतुर तू मूर्ख नारी,
कबहुँ न पिय की सेज संवारी।।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ

● भद्रसेन

महिला मण्डल का एक विशेष आयोजन था। जिसमें सुवर्चा प्राध्यापिका को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। क्योंकि दो स्थानीय स्नातिकाएँ प्रशिक्षण महाविद्यालय से प्रशिक्षण लेकर आई हैं। उन्हीं के अभिभावाकों के अनुरोध पर कुछ विशेष जानकारी के लिए प्राध्यापिका को यहाँ आमंत्रित किया गया। संयोजिका ने सब का स्वागत, अभिनन्दन करते हुए कहा, कि यह आयोजन प्रवचन के रूप में न हो कर प्रश्न उत्तर के ढंग से होगा। अतः आइए! चर्चा का शुभारंभ करें।

सुलोचना–जब से मेरी बेटी आप के यहाँ से प्रशिक्षण लेकर आई है, तब से उसके हर व्यवहार में विशेष आत्मविश्वास दिखाई देता है। यह सब आप ने क्या सोच कर कैसे किया?

सुनयना– हाँ, मेरी पुत्री भी वहाँ से लौटने के बाद से ही बात–बात में **'स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ'** का संकेत करती है। इस के इस गुरुमंत्र का क्या रहस्य है?

प्राध्यापिका– अपनी दादी जी की प्रेरणा से ही मेरे विचारों में परिवर्तन आया है। प्राध्यापिका पद प्राप्त करने पर जब मैंने छात्राओं की मानसिक स्थिति को आज के परिप्रेक्ष में अनुभव किया, तो इस की चर्चा में दादी जी से की। तब उन्होंने इसी गुरुमंत्र को समाधान के रूप में अपनाने के लिए कहा। अध्यापन और गृहस्थ में इस मूलमंत्र पर मैंने विशेष विचार किया। इसीलिए अपने सम्पर्क में आने वाली हर महिला ओर विशेषतः छात्राओं को इस मूलमंत्र के स्वारस्य से परिचित कराती हूँ। आप दोनों से ये प्रश्न उठातीं या नहीं, पुनरपि मैंने आज इसी मूलमंत्र पर ही चर्चा करनी थीं

अतः उपस्थित महिलाओं से अनुरोध है, कि कुछ देर अपना ध्यान इस ओर लगाएँ। **स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'** यह ऋग्वेद के 8,.33,19 मंत्र का अन्तिम चरण है। यह अपने आप में एक पूर्ण वाक्य है, क्योंकि वाक्य नियम/एकहीवाक्यम्। के अनुसार कर्ता, कर्म आदि अन्य पद/पदसमूहः/ समुच्चयो वाक्यम्। क्रियापद से ही वाक्य रूप से पूर्ण होते हैं। निरुक्ताकार यास्क के अनुरूप मध्यम पुरुष युक्त क्रियापद को किसी बात का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन करनेवाला मानना चाहिए।

अतः इस मंत्रांश का अर्थ है–नारी तु ब्रह्मा हो अर्थात तुम महती महान हो। यहाँ पहला शब्द स्त्री है, जो कि बहुत ही प्रसिद्ध है। नारी, महिला, औरत, Woman भी उसी को कहा जाता है। नारी के प्रति समाज में जो भावनाएँ हैं, उस की तुम भुक्तभोगी हो और साहित्य में जैसा नारी का चित्रण है। वह तुम प्रायः सुनती तथा पढ़ती रहती हो। हर भाषा के प्रत्येक शास्त्र में महिलाओं के प्रति दुहरी (दो प्रकार की) भावनाएँ भरी हुई हैं। केवल लोकगीतों, पञ्चतंत्र जैसे कथा साहित्य में ही नहीं, अपितु गंभीर विषयों वाले शास्त्रों में भी दो प्रकार की चर्चा प्राप्त होती है। इन दोनों पक्षों के विचारों के गुण–दोष और उस–उस के कारणों पर विमर्श के लिए न तो इस समय समय है तथा न ही अपेक्षा या आज कोई लाभ है।

स्त्री शब्द स्त्ये,स्टै (शब्दसंघातयोः) धातुओं से सिद्ध होता है (सत्यायते ईट्–उषादि कोष 104.166.1 स्त्यै आदि धातुओं की गहराई में जाने की यहाँ अपेक्षा नहीं है। मेरी दृष्टि से इन धातुओं के आधार पर जीवन तथा परिवार का फैलाव करने में समर्थ और मर्यादा से बाहर जाने में लज्जा, संकोच करने वाली। अतः शिष्टाचार का ध्यान रखने वाली लज्जाशील नारी ही **स्त्री** शब्द का वाच्य है।

ब्रह्मा– संस्कृत साहित्य के कल्प=कर्मकाण्ड, प्रयोग वाले यज्ञीय वाङ्मय में ब्रह्मा शब्द का विशेष प्रयोग होता है। बड़े यज्ञों में उस को करानें वाले मुख्य रूप से चार ऋत्विक (ग/ज/) होते हैं। होता, उदगाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा, इन सब का मुखिया, अध्यक्ष ब्रह्मा 1. ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु। **ब्रह्मा त्वो वदति जात विद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उत्वाः।** ऋ.10,71,11 **इत्यृत्विक् कर्मणां विनियोगामाचच्टे। ब्रह्मैको जाते जाते विद्यां वदति, ब्रह्मा सर्वविधः सर्वं वेदितुमहेति। ब्रह्मा रविृढःश्रुततो ब्रह्म, परिवृढं सर्वतः निरुक्त** 1,3 अर्थात् वेद ओर यज्ञविद्या का सर्वाता ब्रह्मा अवसर–अवसर के अनुरूप आज्ञा देता है। ही होता है। जिस की आज्ञा, अनुमति, निर्देश पर अन्य अपना–अपना कार्य करते हैं। ब्रह्मा के स्वरूप की चर्चा में मन के साथ उस का सम्बंध एवं तुलना दर्शाई गई है। 2. मनसा एवं ब्रह्मा यज्ञस्य अन्यतरं पक्षं संस्करोति–गोपथ ब्रह्मण 3,2 जैसे आँख, कान आदि इन्द्रियों की अपेक्षा मन इन इन्द्रियों का नियंत्रक है। 3.एकादशं मनोज्ञेयं स्वगुणेनोभयात्मकम। यस्मिञ्जिते जितावेतौ भवतः पञ्चको गणे।। मनुस्मृति 2,92 ब्रह्मा अपना अधिकतर कार्य मन से ही करता है। ब्रह्मा यज्ञ में अन्य ऋत्विजों का मन की तरह ही नियंत्रक, संचालक होता है। साहित्य में जिस–जिस आधार से जो कोई जहाँ–कहीं बड़ा है, वह वहाँ ब्रह्म–ब्रह्मा कहलाता है। अतः बड़ेपन के कारण किसी को ब्रह्मा कहा जाता है। हाँ वैसे साहित्य में प्रसंग के अनुरूप ब्रह्म अनेक अर्थों में प्राप्त होता हैं जिन का वर्णन 'ब्रह्मदर्शन' में किया गया है। मूलतः ब्रह्म शब्द (बृह् (बृद्धौ) धातु से बनता है और जिस का सामान्य सा अर्थ है–बड़ा। नारी एक रचनाकार, निर्मात्री होने से बहुत बड़ी (ब्रह्मा) है। इसीलिए माता के रूप में उस का एक उच्चतम स्थान है।

देवों को अपना इष्ट माने वालों की परम्परओं में त्रिदेव प्रतिष्ठित महत्त्व रखते हैं। जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश/शिव अन्य भी अनेक इस के नाम प्रचलित हैं। इन में से प्रथम ब्रह्मा=सृष्टि का केवल सृष्टा, निर्माता, रचनाकार रूप में मान्य है। हाँ वेदादि शास्त्रों में निर्माण, पालन, प्रलय एक ही के कर्म कहे गए हैं। **4. अथातो ब्रह्मजिज्ञासाः, जन्माघस्य यतः वेदान्त 1,1,1–2 यतो व इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तैत्तिरीय उपनिषद्** 3,1,2 'दुनिया बनाना, बना के चलाना, बस उसी का काम है।' सृष्टि के सृष्टा की तरह महिला–परिवार सृष्टि की निर्मात्री, रचनाकार अर्थात ब्रह्मा है। पुरुष की अपेक्षा नारी का सन्तान, रचना व पालन में अधिक योगदान, सम्बंध है। 1माता ताम्यो गरीयसी।। मनु. 2,133 बुआ, चाची, मासी आदि (महिला) रिश्तेदारों की अपेक्षा माता का योगदान सर्वोत्कृष्ट है। सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते।। मनु. 2,145 शिक्षम की अपेक्षा माता ओर पिता की अपेक्ष माता योगदान सहस्र गुणा अधिक है। माता का योगदान, कार्य प्रत्यक्ष है। (विशेष अनुमति का संकेत करने पर निर्देशानुसार)

सुप्रभा– सुवर्चा जी! अभी जो आप ने दो वाक्य कहे हैं, ओर विशेषतः माता का योगदान प्रत्यक्ष कर्म है, क्या इन शब्दों का कोई विशेष अन्तर्निहित भाव है?

सुवर्चा–हाँ सुप्रभा! स्पष्टता की दृष्टि से सजगता उपयुक्त ही है। संस्कार विविध के (पच्चीसवें संस्करण के) पृ. 257 पर अर्थ सहित आए ये तीन (9,26,28) श्लोक विशेष पठनीय हैं और विशेषतः 27 श्लोक अर्थ सहित मनने योग्य हैं जैसा कि **"उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्। प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्रीनिबन्धनम्।।** मनु. 9,27 हे पुरुषो! "अपत्यों (सन्तानों) की उत्पत्ति, उत्पन्न कर पालन करने आदि लोकव्यवहार को नित्य प्रति जो कि गृहाश्रम का कार्य होता है उस का निबंध करने वाली प्रत्यक्ष स्त्री है।"

मनुस्मृति के 'प्रत्यक्षं स्त्री निबन्धनम्" शब्दों का सीधा, स्पष्ट भाव यही है, कि ये सारी बातें, व्यवहार स्पष्ट रूप से नारी से जुड़े हुए हैं। निबन्ध शब्द का भाव है, कि यह प्रबन्ध, व्यवस्था, कार्य सीधी ही महिलाओं के हाथ मे रहना चाहिए। चाहे वह दूसरों से कराए, पर निरीक्षण, दायित्व उसी का रहना चाहिए। तभी तो महर्षि दयानन्द ने लिखा है– 'जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढनी चाहिए, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चहिए। क्योंकि इन के सीखे बिना सत्यासत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल वर्तमान, यथायोग्य संतानोत्पत्ति, उन का पालन वर्द्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा करना करना, वैद्यकादि से औषधवत् अन्न पान बनाना और बनवाना नहीं कर सकती जिस घर में रोग भी न आवें और सब लोग सदा आनन्दित रहें। शिल्प विद्या को जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र आभूषण आदि बनाना–बनवाना, गणित विद्या के बिना सब का हिसाब समझना–समझाना – 3,71–72 ।

इस सारे सन्दर्भ में करना–कराना, बनना और बनाना समझना–समझाना शब्दों का प्रयोग ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भोजन, वस्त्र आभूषण किसी कारण से स्वयं न कर सकने पर, वहाँ दूसरे से वह–वह कार्य लेने की योग्यता भी अवश्य होनी चाहिए। पुरुषों की अपेक्षा वैद्यक, शिल्पविद्या महिलाओं के लिए अनिवार्य श्रेणी में रखी गई हैं ओर साथ–साथ इन विद्याओं की अनिवार्यता के लिए भी दिया गया है। जिस घर, गृहस्थ, आनन्द को दोनों चाहते हैं, वह इस सारे पुरुषार्थ के बिना सिद्ध नहीं हो सकता।

हाँ, मूलतः हम ब्रह्मा शब्द की स्पष्टता के लिए बात कर रहे थे, कि माता भी ब्रह्मावत् रचनाकार है। माता का कार्य स्पष्ट होने से माता की उपमा से ही परमात्मा की सत्ता, कर्म को समझाने के लिए कहा गया है– –माँ से बढ़ कर, भगवान की मूरत क्या होगी'।

यतो हि 'मांवां ठण्डियों छांवां' और **'कुपुत्रो जायेत–कुमाता न भवति।** वेद स्थान–स्थान पर भक्त को भक्ति की प्रक्रिया सिखाते हुए माता–पिता के साथ सन्तान को जो संबंध है, उसी की ओर संकेत करता है। **1. स नः पितेव सूनेवऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा न स्वस्तेये।।** 1,1,9 **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।।** ऋ. 8,98,11

इस बढ़ती गंभीरता को अनुभव करके सभी को सजग करने के लिए सुदर्शना ने अनुमति लेकर पूछा कि ब्रह्मा के बड़े अर्थ को सुन कर मुझे एक बात याद आ रही है। क्योंकि भारतीय भावना के अनुसार नारी का पाकशाला, भोजनालय से विशेष संबंध है। **2. 'सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया। सुसंस्कृतोपस्करया मनु. 5,150 स्त्री को योग्य है, कि सदा आनंदित होके चतुरता से गृहकार्यों में वर्तमान रहे तथा अन्नादि के उत्तम संस्कार, पात्र, गृह आदि का सत्कार ओर घर को भोजनादि............ करने में सदा प्रसन्न रहे।' महर्षिदयानंद कृत संस्कारविधि– गृहस्थाश्रम पृ. 256।** इस कला में पुरुष की अपेक्षा महिला प्रवीण भी अधिक होती है। वैसे भी इस ऋतु में बड़े बहुत पसंद किए जाते हैं। क्या वहीं बड़ा ही बृह्=ब्रह्मा का सामान्य अर्थ है या यहाँ कोई विशेष रहस्य है?

क्रमशः

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एक विलक्षण व्यक्तित्त्व

● डॉ. राम प्रकाश

पतला बदन, दरम्याना कद, गोरा रंग, चौड़ा माथा, भाव भीनी आँखें, बहुत नर्म और भूरे रंग के सिर तथा दाढ़ी के बाल, मुख पर चन्द्र की कांति और सूर्य के तेज की शोभा, गम्भीर किन्तु सरल मधुर ध्वनि– मिलकर गुरुदत्त के व्यक्तित्त्व को मनमोहक बनाती थी। उनके हृदय में पवित्रता, आँखों में गहनता, मुख पर बच्चों की सी सरलता, कल्पना मे निर्मलता, चिन्तन में व्यापकता, संकल्प में दृढ़ता, भुजाओं में कार्यक्षमता और पाँव में गतिमयता थी। उनमें वैलन्टाइन जैसी स्मरण शक्ति, डैमोस्थ्नीज जैसा पुरुषार्थ तथा सुकरात सदृश्य मृत्यु से निर्भयता थी। क्या नहीं था? माली ने सर्वोत्तम पुष्प चुनकर गुलदस्ता सजाया था। बर्फ शीतल है, पर वे हिमगिरि से अधिक शीतल थे। अग्नि गर्म है, पर वे ज्वालामुखी से अधिक गर्म थे। उनमें सागर की गहराई और पर्वत की ऊँचाई विद्यमान थी।

गुरुदत्त में विचित्र आकर्षक था। लोग उनकी संगति चाहते थे। मधुर स्वभाव था। कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे। स्वभाव से नेक, मिलनसार व प्रेमी थे। शिष्यों, नौकरों एवं अधीनस्थ व्यक्तियों से उनका व्यवहार बहुत मधुर था। उनके संग घंटों बातें करते और हंसते रहते थे। बच्चों के साथ बच्चों की तरह व्यवहार करते थे, बड़ों से साथ बड़ों की तरह। उन्हें अपने पद तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का अभिमान नहीं था। कार्यकर्ताओं के साथ उनक व्यवहार आजकल के नेताओं जैसा नहीं था। अपितु स्नेह–सना था। उनके सुख–दुःख को अपना सुख–दुःख मानते थे। एक बार मास्टर आत्माराम अमृतसरी रोगग्रस्त हो गए। इसलिए कई दिन तक पण्डित जी के दर्शनार्थ न जा सके। स्वस्थ होने पर मिलने गए। पण्डित जी भी उन दिनों बहुत रुग्ण थे, अतः दिन में सो रहे थें। मास्टर जी जाकर चारपाई पर बैठ गए। जब आँख खुली तो बहुत धीमे स्वर में मास्टर आत्माराम से पूछने लगे, "अब तुम्हारा क्या हाल है?" पण्डित जी इतने बीमार थे कि उनसे बोला भी नहीं जा रहा था, तो भी अपने दुःख की चर्चा नहीं की। हाँ उन्हीं के विषय में पूछते रहे। पण्डित जी का व्यवहार इतना स्नेहभरा था कि मास्टर जी दिल में सोचने लगे– "इनसे अधिक प्रेम अपने जीवन में कौन सिद्ध कर सकता है?" वे विद्या के नहीं, प्रेम के अथाह सागर थे।

मुनिवर गुरुदत्त आध्यात्मिक मूल्यों की बहुत कदर करते थे। चरित्र के विषय में लोक–व्यवहार के स्थान पर वेद को ही प्रमाण मानते थे। जीवन की शुद्धता पर विशेष बल देते थे। आयु भले कम थी पर जीवन महात्माओं जैसा था। अपने आध्यात्मिक संयम और नैतिक आचरण के कारण वे जय–पराजय, लाभ–हानि, सुख–दुःख आदि परस्थितियों में समान थे। यौवन के मदमस्त हाथी हो उन्होंने अंकुश द्वारा वश में कर रखा था। वे इन्द्रियों के दास नहीं, स्वामी थे। एक दिव्यात्मा ने काम, क्रोध मोह, लोभ, अहंकार सभी जीत रखे थे। एक बार किसी महात्मा ने पूछा– आपको किसी बात से बहुत दुःख होता है? बोले– जब क्रोध मेरे मन को ग्रस्तता है, वह समय सर्वाधिक दुःखदायी होता है। वैदिक साहित्य के गहन अध्ययन, अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों एवं आत्मा की पवित्रता के कारण उनका चरित्र अत्यन्त निर्मल था। कुचालों तथा अनैतिक कार्यों से उन्हें बहुत घृणा थी। कुटिलता तथा जालसाजी के लिए उनकी अचारा संहिता में कोई स्थान नहीं था। झूठी सन्धि उनके बस की बात नहीं थी। उन जैसी निराली स्पष्टवादिता, कुटिलता की साहसपूर्ण भर्त्सना की क्षमता, कथनी में आत्मिक शक्ति, नैतिक साहस, स्वभाव में विचारों की सरलता अन्यत्र कहाँ मिलेगी?वे मनसा वाचा कर्मणा से पूर्णतया एक थे। किसी को अच्छा लगे या बुरा– इसकी चिन्ता किए बिना सदैव सत्यभाषण करते थे। हाँ, उनका सत्यभाषण किसी को दुखी करने के लिए नहीं अपितु हित की मंगल भावना से होता था। विचारों में जितनी दृढ़ता थी, उनकी अभिव्यक्ति में वे उतने ही सहज थे। उनकी वाणी के प्रभाव से यह स्पष्ट था कि महापुरुष का सामान्य वाक्य भी कितना प्रभावशाली और जोरदार होता है। वे झूठी महत्त्वाकांक्षा के दम्भ से रहित थे। उन्होंने कभी सम्मान नहीं चाहा।सम्मान उनका पीछा करके स्वयं सम्मानित होता था। उनमें वे आन्तरिक आकर्षण तथ दिव्य शक्तियाँ थीं जिनके कारण उनका जीवन कृत्रिम महापुरुषों से स्पष्ट भिन्न दीख पड़ता है।

मुनिवर गुरुदत्त विचित्र व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे शान्त स्वभाव, कर्मठ, मेधावी, प्रतिभाशाली, प्रगल्भ वेदवेत्ता एवं गंभीर चिंतक थे। अदम्य उत्साह की मूर्ति थे। साहस छोड़ना तो सीखा ही नहीं था। उनमें हर संभव कार्य करने की क्षमता थी। रातों जागकर कार्य कर सकते थे। थकना शब्द उनके लिए निरर्थक था। ग्रहणशक्ति आश्चर्यजनक थी। अल्प समय में ही कईं–कईं सौ पृष्ठ पढ़ जाते और गूढ़तम रहस्य प्रथम पाठ में ही समझ लेते थे। उनकी बौद्धिक क्षमताएँ अद्भुत थीं। कईं विषयों के पण्डित थे। यद्यपि संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य पर उनका अधिकार ऋषि दयानंद सरस्वती सदृश तो नहीं था परन्तु वह बाढ़ के पानी की तरह उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। हाँ, पश्चिम विज्ञान का ज्ञान अतिरिक्त था। छह भाषाएँ – अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अरबी और फ़ारसी जानते थे। अंग्रेजी बहुत अच्छी लिखते थे। सुंदर एवं उपयुक्त शब्द उनके लेखों में मोतियों की भाँति जड़े जुए हैं। पर उनकी महानता अच्छी अंग्रेजी लिखने में नहीं,अपितु कुछ और ही बातों में निहित है।

गुरुदत्त की दिनचर्या अनियमित थी। पढ़ना–लिखना, खाना–पीना, सोना–जागना, उठना–बैठना, खेलना–कूदना कोई कार्य भी नियमबद्ध नहीं था। जब सोने की ठान लेते को कई–कई दिन सोते ही रहते। केवल भोजनादि के लिए जागते और फिर समाधिास्थ हो जाते। यदि पढ़ना आरंभ कर देते तो दो–दो, तीन–तीन दिन लगातार पढ़ते ही रहते। थोड़ी देर के लिए भी आँख न झपकते। भ्रमण करने निकल पड़े तो मीलों चलते जाते; फिर तो ज्येष्ठ की दिपहरी में भी घूम रहे हैं। यदि घर में बैठने की सूझ गई तो कईं–कईं दिन तक भीतर ही बैठे रहते; फिर केवल कॉलेज आने–जान के अतिरिक्त और कहीं जाने का नाम ही नहीं लेते थे। उन्हें स्वयं इस स्वभाव का आभास था, इसीलिए दैनिक पंजिका में प्रायः इसकी चर्चा है। वैसे वे नियमित रूप से तो डायरी भी नहीं लिखते थे। पण्डित जी ने 2 जुलाई, 1889 को डायरी मे लिखा था, "क्या मेरे लिए सुधरना संभव है? यदि ऐसा हो सकता है तो मैं किन परिस्थितियों में 'प्रवेश निषेध' जारी कर सकता हूँ?" अतः अनियमितता के कारण अधिक लोग विचार–विमर्श के लिए आते रहते थे। व्यासे को सरिता के पास जाना स्वाभाविक है। पर वह सरल स्वभाव परोपकारी जीव कभी किसी को 'नहीं– न कह सका, यद्यपि इसके लिए भारी मूल्य चुकाना पड़ा परन्तु प्रत्येक कार्य में अनियमित होने का यही एक कारण हो यह भी संभव नहीं। फिर ऐसा क्यों था – कहा नहीं जा सकता। इस गुत्थी को कोई मनोवैज्ञानिक पण्डित शायद ही सुलझा सके। पण्डित जी का अपने ऊपर संयम तो था। फिर क्या प्रत्येक कार्य करने की क्षमता ही उनके अनेक कार्यों में उलझाकर अनियमित जीवन का राही तो नहीं बना देती? बस, यही अन्तर्यामी जानता है।

पण्डित जी दिल के बादशाह थे। धन की कभी चिन्ता नहीं की। कभी हिसाब–किताब नहीं रखा। किसी को दे दिया तो दे दिया, फिर माँगने का प्रश्न ही नही। पर यदि स्वयं किसी से उधार लेते तो लौटाए बिना चैन न पड़ती थी। वैसे बहुत ही गूढ़ मित्रों के सिवाय किसी से उधार नहीं लेते थे। उनके लिए धन लोक–व्यवहार चलाने के लिए साधन मात्र था। इसलिए आवश्यकता से अधिक अर्थ संग्रह को पाप मानते थें वे कहा करते थे "निर्वाह मात्र के लिए धर्मानुसार धन कमाना साहूकारी है, न कि पासे से अर्थसंग्रह करके विषयभोग करना। **'मा गृधाः कस्यस्विद्धनम्** के उपदेश को उन्होंने जीवन में उतारा था। वे केवल वाणी से नहीं, अपितु कर्म से समाजवादी थे। उनके पास जितना धन बच पाता, उसे वे परोपकार में लगा देते थे। पुस्तकें खरीदना तथा निर्धन विद्यार्थियों की सहायता में ही उनका अधिक धन व्यय होता थां स्वामी अच्युतानंद ने लिखा है, "पण्डित जी बड़े ही दानशील और धार्मिक कार्यों में धन व्यय करने वाले थे। राजकीय कॉलेज में दो सौ पचास रुपए मासिक वेतन पाते थे परन्तु अगले महीने की पहली तिथि से पूर्व ही यह रुपया सामाजिक कार्यों में व्यय कर देते थे।" बैंक में उनकी कुछ भी जमा धन–राशि न थी। उनकी कुल सम्पत्ति थी– मुलतान में वही एक पुराना मकान, चंद कपड़े, कुछ पुस्तकें, असंख्य मित्र एवं प्रशंसक। वे सरिता के जल को दोनों हाथों उंडेलते थे। उन्हें अपने लिए चाहिए ही क्या था? निजी आवश्यकताएँ बहुत कम थीं। एक नौकर के अतिरिक्त कभी दूसरा नहीं रखा। कितनी बार सारा कार्य अपने हाथ से ही निपटा लेते थे। प्रोफ़ेसर बनकर भी उन्होंने सुख–सुविधा की सामाग्री को नहीं बढ़ाया। सारा कार्य पूर्ववत् चलता रहा। लाहौर में किराए के जिस छोटे से मकान में एम.ए. में पढ़ते समय रहते थे, अन्त तक उसी में रहते रहे। हाँ, एक बार पिताजी बीमार होकर चिकित्सा के लिए लाहौर आ गए तब उस तंग मकान को दो मास के लिए अवश्य बदलना पड़ा। नहीं तो उसी में रहते पढ़े, उसी में रहते पढ़ाया, उसी में रहते ज्ञान–विज्ञान के क्षितिज को पार किया और...और...वहीं से उस अज्ञान स्थान की यात्रा पर चले गए।

वेशभूषा बहुत सादी थी किसी विशेष पहरावे के दास नहीं थे। न उन्हें इस विषय में किन्ही दीवारों में घिरा रहना पसंद था। पहरावे में किसी जातीयता का विचार नहीं करते थे। उनके विचार से प्रत्येक व्यक्ति पहरावे के लिए स्वतंत्र है। व्यक्ति सुविधानुसार जैसा वस्त्र चाहे, पहन ले। बस, वह सादा, स्वच्छ और शालीन होना चाहिए। इसीलिए उन्हें जो मिल गया, वही पहन लिया। वैसे साधारण तथा बेढंगे वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे। वास्तविकता यह थी कि वस्त्र उनके लिए आवश्यकता पूर्ति के साधन थे, सजावट के नहीं। दिखावा चाहे आन्तरिक हो या बाह्य, उन्हें पसन्द ही नहीं था। हीरे का मूल्य उसकी उस आन्तरिक चमक के कारण है जो प्रत्येक आवरण में से झलक पड़ी है। वे कहा करते थे, "लोग क्या कहेंगे– इसकी चिन्ता मत करो। कोई भी व्यक्ति सकल संसार को प्रसन्न नकीं कर सकता।" वे समझते थे कि जो नहीं जानते, वे जानते ही नहीं और जानते हैं, वे जानते ही हैं। फिर यह वस्त्रों का प्रदर्शन किसके लिए?

पण्डित जी पहले पायजामा पहनते थे। पैंट लाहौर आने के पश्चात् पहननी आरंभ की थी। संभवतः इसमें उन्हें अधिक सुविधा और चुस्ती अनुभव हुई। यूँ जी में आया तो दीक्षान्त समारोह में पहनने वाला गाउन पहनकर ही घूमते रहते। वही पहनकर आर्यसमाज की अन्तरंग सभा में चले जाते। विचित्र लीला थी उनकी।

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

लगता है गुरुदत्त अपने शरीर को किसी विशेष तपस्या के लिए तैयार कर रहे थे क्यों इसलिए कभी सर्दी में ठंडे कपड़े पहन लेते और गर्मी में गर्म। कभी दिन में नंगे पाँव घूमते और कभी रात मे छाता ले लेते। वैसे बूट पहनते थे। लाहौर में रहते हुए शरद् ऋतु में प्रायः कई वर्ष तक लट्ठे की वास्कट तथा कोट और साधारण सी टोपी– बस यह शरद् ऋतु का पहनावा था। जब लोग गर्मी से झुलस रहे होते थे तब कश्मीर का कोट और वास्कट पहन लेते थे तथा रात को ऊनी कम्बल ओढ़ा करते थे। चाहे कोई ऋतु हों, यात्रा में कम्बल साथ रखते थे।

सोते समय कुछ बिछा लिया तो बिछा लिया, नहीं तो यूँ ही सोए रहे। एक बार मास्टर आत्माराम अमृतसरी उन्हें प्रातःकालीन सैर के लिए लेने आए। पण्डित जी छत पर एक टूटी हुई चारपाई पर बिना दरी, विछौने तथा सिरहाने के सो रहे थे। मास्टर जी ने उन्हें जगाया तथा पूछने लगे, "पण्डित जी, नंगी खाट और वह भी टूटी हुई, इस पर आपको कैसे नींद आ गई?" हँसकर बोले, "नंगी खाट निद्रा में बाधक कैसे हो सकती है? बेचारी गरीब इन्हीं खाटों पर सोकर अमीरों से अच्छी नींद का आनंद लूटते हैं।

वैसे उन दिनों मुलतान का बना हुआ इकहारा कपड़ा साधारण दरी के काम में लाया जाता था गुरुदत्त उसे ही बिछाते थे। ओढ़ने के लिए साधारण चादर थी। कितनी सर्दी हो, वे इसी में लिपट कर सो जाते थें कई बार एक कम्बल में ही सोते रहते। लाला लाजपतराय ने वर्षों यह दृश्य स्वयं देखा था। वे लिखते हैं, "एक–दो बार जब मुझे उनके पास सोने का अवसर मिला तो मुझे कम्बल या इस प्रकार का अन्य वस्त्र न होने के कारण सारी रात जागना पड़ा, जबकि दूसरी ओर वे गाढ़ी नींद सोते रहे तथा सर्दी लगने का कोई चिह्न प्रकट नहीं किया।"

आर्यसमाज जालंधर का प्रथम वार्षिकोत्सव था। दिसम्बर का महीना। कड़कती शीत। मूसलाधार वर्षा ने शीत की तीव्रता और भी असह्य बना दी थी। सायंकाल के समय पण्डित गुरुदत्त, महात्मा मुन्शीराम व मास्टर भक्तराम भ्रमणार्थ निकल पड़े। मुन्शीराम ने कई गर्म वस्त्र पहन रखे थें ओवरकोट भीपहना हुआ था। पर गुरुदत्त के पास एक भी गर्म वस्त्र नहीं था। वही साधारण या लट्ठे का कुर्ता, डबल जीन का वास्कट और कोट। भक्तराम ने पण्डित जी से गर्म वस्त्र पहनने का अनुरोध किया। तब भोले बादशाह ने छाता खोलकर ले लिया और बोले, "ओस से सर्दी पड़ेगी। लो, अब इससे बचाव हो जाएगा।" मुन्शीराम ने सेवक को बुलाकर उनके लिए घर से एक धुस्सा मंगवाना चाहा। पण्डित जी ने झटपट मुंशीराम का हाथ उनकी जेब में से निकालकर अपने हाथों मे ले लिया और बोले, "बताओ, धुस्सा किसे चाहिए?" सच, गुरुदत्त के हाथ अधिक गर्म थे। इसके पश्चात् महात्मा मुन्शीराम ने भी अनावश्यक वस्त्रों का बोझ ढोना बंद कर दिया।

यह ठीक है कि व्यर्थ का शृंगार तथा अनावश्यक वस्त्र पहने फिरते रहने का कोई लाभ नहीं। पर मुनि गुरुदत्त के व्यवहार को समझना भी कठिन है क्योंकि इसका ही परिणाम था कि वज्र समान शरीर यौवनकाल में ही झटका खा गया। संम्भवतः इसीलिए अन्तिम दो तीन वर्षों में उन्होंने इस स्वभाव का परित्याग कर दिया था। गुरुदत्त ने अपने शरीर से कठोर व्यवहार किया। उन्हें तो अपनी चिन्ता थी ही नहीं, पर आर्यजन भी उस हीरे की संभाल न कर पाए।

पण्डित जी की स्वाध्याय में बहुत रुचि थीं पुस्तकों पर बहुत व्यय करते थे। ऐसा लगता था कि मानों वे पुस्तकों के लिए ही कमाते हों। परन्तु स्वाध्याय के पश्चात् केवल संस्कृत, ऋषि दयानंद तथा एन्ड्रयो जैक्सन डेविस के ग्रंथों को ही संभालकर रखते थे। उन्हें 'पवित्र पुस्तकालय' कहा करते थे। उनके अतिरिक्त मूल्यवान से मूल्यवान पुस्तक को भी पढ़कर फेंक देते थे। उन्होंने सत्यार्थप्राकाश को अठारह बार पढ़ा था। वे कहा करते थे कि सत्यार्थप्रकाश की प्रत्येक पुनरावृत्ति पर मुझे सदैव नई बातों का बोध होता है। एक बार उन्होंने यहाँ तक कहा, "सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति चंद आने में मिल जाती है पर यदि इसका मूल्य अधिक भी होता तो मैं अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर भी इसे खरीदता। मुझे यह ग्रंथ इतना प्रिय है कि इसे खरीदने के लिए गले में झोली डालकर चन्दा मांगने के लिए भी तैयार हूँ।" पण्डित जी डेविस महोदय के ग्रंथ भी चाव से पढ़ते थे। हिन्दी–संस्कृत न जानने वालों को डेविस की पुस्तके पढ़ने के लिए कहा करते थें उनके चित्र के साथ गुरुदत्त की आकृति कुछ मिलती थी। बाल सुलभ स्वभाव गुरुदत्त इस बात से बड़े प्रसन्न होते। डेविस के लिए उनके हृदय में काफी मान था। वे उसे अपने चाचा कहा करते थे। पर ऋषि के दर्शन कर लेने के पश्चात् उनके प्रति श्रद्धा सब सीमाएँ पार कर चुकी थी। गुरुदत्त ऋषिवर को अपने पिता मानते थे। इसमें अतिशयोक्ति भी क्या? यदि लाला रामकृष्ण ने उसे भौतिक जन्म दिया, तो आध्यात्मिक जन्म दिया ऋषिवर ने जगद्गुरु ने, गुरुदत्त को आर्य समाज को देकर उनका 'गुरुदत्त' नाम सार्थक बना दिया।

पण्डित जी पुराणों और अश्लील तथा कामवासना भड़काने वाले उपन्यासों के पढ़ने का निषेध किया करते थे। स्वामी आत्मानंद को पुराण पढ़ते देखकर उन्होंने कहा था, "आप संन्यासी हैं। वेद का नियमित स्वाध्याय किया करें। पुराणों पर समय और शक्ति नष्ट न करें। इसका परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा। आस्तिकों को वेद का ही स्वाध्याय करना चाहिए।" ऐसा ही हुआ। बाद में स्वामी जी नास्तिक हो गए।

पण्डित जी का भोजन सादा और विशुद्ध शाकाहारी होता था। मांसभक्षण के प्रबल विरोधी थे। उनके भोजन में जो दाल–सब्जियाँ व अन्य पदार्थ परोसे जाते थे, उन्हें एक–एक करके क्रमशः खाते थे। पानी भोजन के बीच में नहीं पीते थे। मन आया तो एक दो चपाती खाकर बस कर दी; पर खाने लगे तो दो–तीन पाव आटे पर हाथ साफ कर दिया। शराब, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों से उन्हें इतनी घृणा थी कि कोई नशा कभी न खाया, न पिया। भोजन की विशेष चिन्ता न करते थें जिन दिनों कॉलेज में पढ़ाते थे और पिता जी की बीमारी के कारण सेवक उनके पास भेज दिया तब दो महीने केवल दूध और बिस्कुट पर काट दिए। अपने वस्त्र स्वयं धोते रहे। हालत फकीरों की सी थी।

पण्डित जी अद्भुत वक्ता थे। उनके मतानुसार सत्य भाषण का ही दूसरा नाम अद्भुत वक्तृता है। उनकी वाणी में अकथनीय प्रवाह था, ऐसा प्रवाह जो भाव विभोर श्रोताओं को अपने साथ बहा ले जाता था। बड़े–बड़े मौलवी एवं पादरी उनका भाषण सुनकर स्तब्ध रह जाते थे। आर्य जनता वर्ष भर उस घड़ी की प्रतीक्षा करती थी जब उन्हें उनका भाषण सुनने का सौभाग्य मिलेगा। अनेक जन उत्सव में केवल उनका भाषण ही सुनने आते थे। व्याख्यान के बाद धन एवं आभूषणों की वर्षा होती थी।

व्यायाम में उन्हें बाल्यकाल से ही रुचि रही। वे जिम्नैस्टिक, क्रिकेट तथा फुटबॉल टीम के सदस्य थें उन्हें शतरंज का भी कुछ दिन शौक रहा स्नान करने का बड़ा ध्यान रखते थे। चाहे कोई ऋतु हो, प्रतिदिन दो बार ठण्डे पानी से जल स्नान अवश्य कर लेते थे। बचपन में उनका शरीर बड़ा हृष्ट पुष्ट था। पर लागातार प्राकृतिक नियम तोड़े गए। उनका ही दण्ड भुगतना पड़ा अन्यथा आयु ही क्या थी केवल 26 वर्ष!

1634 सैक्टर 13, अर्बन स्टेट, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, मो. न. 0618181575

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

प्रभु दर्शन

तू बौरी बौरापन कीन्हों,
भर जोवन प्रिय अपन न चीन्हों।।
जागु पिया अब सेज न तेरे,
तोहि छोड़ि उठि गए सबेरे।।
कह कबीर, सोई धन जागै,
शब्द बान उर अन्तर आगे।।

देखो, बाहर देखो!

उषा देवी चहक रही है। स्वास्थ्य, सौन्दर्य, सफलता, आस्तिकता, सुख, सम्पन्नता, ऐश्वर्य की दौलत लुटा रही है और तुम अभागे सो रहे हो? यह अमृतबेला है। तीन घड़ी रात रहते शय्या को छोड़ दो। निहारो तो, तुम्हारा प्रीतम कितना सुन्दर रूप धारण करके इस बहाने तुम्हें देखने आया है। उठो! गाओ, अपने प्रीतम के गीत गाओ! वन्दना करो। अर्चना करो और हाथ फैलाकर कहो– "लाओ प्रीतम। मुझे मनुष्य बनाने के लिए क्या लाए हो?"

2. शरीर को बलवान् बनाओ!

रोगी शरीर का स्वामी मनुष्यत्व से पतित हो जाता है, क्योंकि उसमें मनुष्य–धर्म को पूर्ण करने का सामर्थ्य नहीं। अपने शरीर तथा इन्द्रियों को इस प्रकार से रखो कि वे सदा स्वस्थ और बलवान् रहें। खान–पान ऐसा सात्विक हो, जिससे शरीर की शक्ति बढ़ती रहे और मनुष्य इस वैदिक आदर्श को दूसरों से सामने निस्संकोच भाव से रख सके–

वाङ्म आसन्नसोः प्राणश्चक्षरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्।।
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः।
प्रतिष्ठा अरिष्टानि में सर्वात्मा निभृष्टः।।

ऋ. 16।60।1–2।।

"मेरे मुख में वाणी है (मुझमें अपने मन के भाव प्रकट करने की शक्ति है, सत्य कहने का भय नहीं है)।"

"मेरी नसों में प्राण है (मैं जीता–जागता हूँ और जीवन के लक्ष्य दिखा सकता हूँ)।"

"मेरे नेत्रों में दृष्टि है और कानों में श्रुति है (मैं यथार्थ ही देखता और यथार्थ ही सुनता हूँ)।"

"मेरे बाल श्वेत नहीं, मेरे दाँत लाल नहीं और मेरी भुजाओं में बड़ा बल है।"

"मेरी रानों में शक्ति है और मेरी जंघों में वेग है। मेरे दोनों पाँवों में दृढ़ खड़ा होने की शक्ति है (मैं इस जीवन–संग्राम में अपने पाँवों पर खड़ा होने के योग्य हूँ)।"

"मेरे सारे अंग पूर्ण और नीरोग हैं। मेरी आत्मा परिपक्व है (बलवान् और तेजस्वी है)।"

इस पवित्र वेदमन्त्र में अनुसार हमारा एक–एक अंग बलवान् हो। जो उषाःकाल से पूर्व उठकर शौच जाता है, व्यायाम, भ्रमण या योग के आसन करता है, जिह्वा में स्वाद के अधीन होकर सात्विक और पोषक अन्न, दूध, फल खाता है, और इन्द्रियों को वश में रखता है, निस्सन्देह वह अपना शरीर इस वेदमन्त्र के अनुकूल बना लेता है। यदि दूध और फल नहीं मिलते तो केवल अन्न से भी वैसी ही शक्ति प्राप्त कर लेता है।

होना यह चाहिए कि शरीर स्वस्थ रहे, क्योंकि स्वास्थ्य के बिना कोई भी कार्यसिद्धि नहीं हो सकती। आयुर्वेद के शास्त्र 'चरक संहिता' में यह आदेश है–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्!

"धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन सबका मूल आरोग्य है।"

क्रमशः

लाहौर के पं. भानुदत्त – जिनसे स्वामी दयानन्द जी ने सुधार कार्य में सहयोग मांगा

● स्मृति शेष डॉ. भवानीलाल भारतीय

अप्रैल 1877 की बात है। जब ऋषि दयानन्द लाहौर पहुँचे और धर्म जागरण का कार्य आरम्भ किया तो उन्हें पता लगा कि यहाँ के पं. भानुदत्त ने सत् सभा का गठन किया है जो निराकार परमात्मा की पूजा का प्रचार करती है तथा मूर्ति को अच्छा नहीं समझती। ऋषि ने पं. भानुदत्त से सम्पर्क साधा और उन्हें अपने विचारों का जानकर अपने कार्य में सहायक बनने के लिए कहा। जब कट्टर पुराणपन्थी पण्डितों को इस बात का पता लगा तो उन्होंने भानुदत्त को जा घेरा और उन पर दयानन्द का सहायक होने का आरोप लगाकर बहुत बुरा भला कहा। पं. भानुदत्त में इतना आत्मिक बल कहां था कि वे प्रचण्ड सुधारक दयानन्द का साथ देते। अतः तुरन्त फिसल गए और उन पौराणिकों को आश्वस्त कर दिया कि वे उनके जैसे ही विचार रखते हैं तथा ऋषि दयानन्द का विरोध करने लगे। बात आई तो वे पौराणिकों का ही साथ देंगे। इस पर जब उनको मित्रों ने कहा कि पहले तो वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे, अब दयानन्द के निराकारवाद की खिलाफ़त क्यों करते हैं, तो उन पण्डितजी ने कहा– "पं. भानुदत्त सरस्वती चाहते तो थे कि जाति हित के कार्यों में उनका सहायक बनूँ तथा उनके साथ–साथ लोगों में उनका उपदेश दूँ परन्तु मैं कुटुम्ब मोह में कुछ ऐसा फँसा हूँ। इस कार्य में रुचि रखने पर भी मुझमें उनके साथ रहने का साहस नहीं है।

पं. भानुदत्त का जन्म राजस्थान से पंजाब में जाकर बसे पुष्करण ब्राह्मण कुल के पं. बख्शीराम के परिवार में सन् 1939 में हुआ था। वे संस्कृत के अच्छे पण्डित थे तथा अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। जब पादरियों ने लाहौर में मिशन कॉलेज की स्थापना की तो वहाँ संस्कृत के प्राध्यापक बनाए गए। उन्होंने सनातन धर्म दीपिका, आर्य प्रश्नावली, समास्य संध्या, संस्कृत सोपान आदि अनेक ग्रन्थ लिखे तथा पंजाब के शिक्षा विभाग के लिए पाठ्य पुस्तकों का भी सम्पादन किया 'पुष्करण सज्जन चरित्र' के लेखक ने लिखा है कि सर्व साधारण की सेवा करने की भावना से पंजाब में ब्रह्म समाज तथा आर्य समाज के पहले सत् सभा की स्थापना की। जब स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहौर पधारे तो आपने बहुत समय तक उनका सत्संग किया परन्तु धार्मिक प्रचार में सहयोग देना स्वीकार नहीं किया आदि। यह स्पष्ट हैं कि पं. भानुदत्त में इतना नैतिक साहस नहीं था कि वे खुलकर ऋषि दयानन्द के वैदिक और उनके सहायक बनते। पंजाब के शिक्षा विभाग में नौकरी कर पं. भानुदत्त ने परिवार पालन तो किया किन्तु धर्म तथा राष्ट्र जागरण में अपने समकालीन सुधारक दयानन्द का सहयोग न कर सके। 12 अक्टूबर 1913 को इनका निधन हो गया।

यह सत्य है कि पं. भानुदत्त ने स्वामी दयानन्द से क्रियात्मक सहयोग नहीं किया किन्तु विचारों से वे उनके पक्षपोषक रहे। 1881 के जनवरी मास में मथुरा के सेठ नारायण के आर्थिक सहयोग से जब कलकत्ता में यूनिवर्सिटी के सेनेट हॉल में स्वामी दयानन्द के विरोध करने के लिए 'आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा' का आयोजन हुआ और बिना स्वामी जी का पक्ष सुने उपस्थित पण्डितों ने अपना एकांगी मत सुनाया तथा घोषित किया "ब्राह्मण भाग की संहिता के तुल्य मान्य है। पौराणिक देवताओं की पूजा, मृतक श्राद्ध तथा गंगादि तीर्थ सेवक वेदानुमोदित है, अग्निमीडे आदि मंत्रों मे आया 'अग्नि' केवल भौतिक अग्नि का प्रतीक है तथा यज्ञ का प्रयोजन मात्र स्वर्ग प्राप्ति है, जलवायु में शुद्धिकरण नहीं। भारत के समाचार पत्रों ने इस घटना को विस्तार से चर्चा का विषय बनाया। पं. भानुदत्त ने भारतमित्र (कलकत्ता 10 फरवरी 1881) में इस कथित धर्म सन्दर्शिनी सभा के मनमाने व्यवहार और एकतरफा फैसला सुनाने की आलोचना की तथा कहा कि इस सभा में उपस्थित विद्वानों ने स्वामी दयानन्द का पक्ष सुने बिना ही मनमाने फतवे दिए हैं उनका कोई मूल्य नहीं है। निष्कर्ष रूप में उन्होंने लिखा– पण्डितों का कर्तव्य है कि वे वही करें जिससे लोक–परलोक दोनों का कल्याण हो।... दयानन्द सरस्वती के सम्मुख आकर शास्त्रार्थ कोई नहीं करता, अपने–अपने घरों में जो जी चाहे ध्रुपद गाते हैं (अर्थात् अपना एकांगी पक्ष रखते हैं)

उन्होंने अपने साथी पण्डितों को परामर्श दिया कि देशहित के लिए एकमत हों परामर्श तथा हिन्दू वर्ग की एकता के लिए यत्न करें। उनको सम्मति में स्वामी दयानन्द भी यही लक्ष्य है। ज्ञातव्य है कि राजस्थान, बीकानेर, जैसलमेर तथा किशनगढ़ इन चार नगरों में पुष्करण ब्राह्मण वर्ग की मुख्य बसावट है। शताब्दियों पूर्व इनके ही कई पूर्वज पंजाब तथा सीमान्त प्रान्त में जा बसे थे। देश विभाजन के बाद इनमें से अनेक अपने पुनः अपने प्राचीन स्थानों में आ गए। पं. भानुदत्त इसी पुष्करण ब्राह्मण जाति के थे, इनका पता मुझे जिस ग्रंथ 'पुष्करण सज्जन चरित्र से लगा। मैंने कई पूर्व स्वामी सर्वानन्द जी के दयानन्द मठ दीनानगर के दयानन्द के पुस्तकालय में देखा था। वहीं से आवश्यक नोट्स लिए थे। स्वामी सर्वानन्द जी ने दयानन्द जीवन कथा सुनने के लिए मुझे दो बार मठ में आमंत्रित किया था।

सन् 1881 में जनवरी मास में मथुरा के सेठ नारायण दास के आर्थिक सहयोग में जब कलकत्ता में यूनिवर्सिटी के सेनेट हॉल में स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का विरोध करने के लिए 'आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा' का आयोजन हुआ और बिना स्वामी जी का पक्ष सुने उपस्थित पण्डितों ने अपना एकांगी मत सुनाया तथा घोषित किया "ब्राह्मण भाग की संहिता के तुल्य मान्य है। पौराणिक देवताओं की पूजा, मृतक श्राद्ध तथा गंगादि तीर्थ सेवक वेदानुमोदित हैं, अग्निमीडे आदि मंत्रों में आया 'अग्नि', केवल भौतिक अग्नि का प्रतीक है तथा यज्ञ का प्रयोजन मात्र स्वर्ग प्राप्ति है, जलवायु का शुद्धिकरण नहीं। भारत के समाचार पत्रों ने इस घटना को विस्तार से चर्चा का विषय बनाया।...

नन्दनवा, जोधपुर राजस्थान

सरदार वल्लभभाई पटेल जी की महर्षि दयान्द सरस्वती जी को श्रद्धांजलि

नोट : स्वामी दयानन्द सरस्वती के 67वें बलिदान दिवस पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा 9 नवम्बर 1950 को आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए सरदार पटेल ने महर्षि दयानन्द को निम्नलिखित श्रद्धांजलि दी थी। सरदार पटेल जी के जीवन का यह अन्तिम सार्वजनिक भाषण था। **– भावेश मेरजा,**

"भारत में जब–जब उसके पुरातन धर्म पर कोई संकट आया है, तब–तब किसी–न–किसी महान् विभूति ने आकर उसको संरक्षण प्रदान किया है। हिन्दू धर्म का जीवन जब विकट काल का सामना कर रहा था, तब स्वामी दयानन्द जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने विश्व के कल्याण एवं संवृद्धि के लिए अपनी ज्ञान सरिता प्रवाहित की। स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने देश को असहाय होने की दलदल में गहरे धंसने से बचा लिया। उन्होंने वास्तव में भारत की स्वाधीनता की नींव रखी। अस्पृश्यता के विरुद्ध आन्दोलन, जिसका बाद में महात्मा गान्धी ने समर्थन किया, स्वामी जी ने शुरु किया था। जिन लोगों का कभी बलपूर्वक धर्मान्तरण कर दिया गया था उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित करने का कार्य स्वामी जी ने आरम्भ किया। धर्म के नाम पर अधर्म का उपदेश देने की उस समय में प्रचलित उस प्रवृत्ति पर स्वामी दयानन्द ने पूर्णतः रोक लगा दी जिसने हिन्दू धर्म को संसार के सामने उपहास की वस्तु बना दिया था। स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म के ऊपर जमा हो गयी सारी गन्दगी और कालिख को हटा दिया। अन्धविश्वासों का जो घटाटोप हिन्दू धर्म पर छा गया था उसे भी स्वामी जी ने दूर कर दिया और उसे स्वच्छ रूप में प्रकाशित कर दिया। वास्तव में स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम प्रतिपादित किया कि हिन्दी को राष्ट्र–भाषा बनाया जाए। लोगों को यह विदित होना चाहिए कि स्वामी जी ने विदेशी शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। वह भारतीय संस्कृति की ही देन थे। तथापि स्वामी जी अन्य देशों से वह सब कुछ लेने को तैयार थे जो अच्छा और उपयोगी है। यह सही और उपयुक्त भी था कि भारतीय संस्कृति को उसका उचित स्थान मिले।"

[स्रोत : 'My Reminiscences of Sardar Patel' (By: Shankar V)] Vol&II] pp- 41–42, 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स', दि. 11 नवम्बर 1950, 'परोपकारी' पत्रिका का फरवरी (प्रथम) 2014 का अंक। 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स' के इस सम्बन्धित अंश का अन्ग्रेजी से हिन्दी अनुवाद : स्मृतिशेष श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य, मेरठ । प्रस्तुति : भावेश मेरजा,

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात – 392015,
मो. 9879528247

सत्यार्थ प्रकाश में आधुनिक विज्ञान

● वेद प्रकाश गुप्ता

परमेश्वर ने पुष्पादि सुगन्ध, वायु–जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिए बनाये हैं, उनको पुज़ारी तोड़ कर नष्ट कर देते हैं। पूर्ण सुगन्ध के समय तक उसका सुगन्ध होता है, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल–सड़कर उल्टा दुर्गन्ध उत्पन्न करता है। इसलिए मूर्तिपूजा करने में पाप होता है। (7, पृष्ठ 260, समुल्लास 11 में–पन्द्रहवाँ)।

विज्ञान के तथ्य–एक फूल जितने दिन पेड़ में लगा रहता है, उतने दिन उसमें सुगंधित रसायन दिन–रात चौबीसों घंटे बनते रहते हैं और वह हवा में फैल कर लाखों लोगों के नासिका के द्वारा ग्रहण होकर लाभ देते रहते हैं। जिस क्षण यानी समय पर फूल को तोड़ा जाता है, उसी क्षण से सुगंध का बनना बंद हो जाता है और उसका सड़न प्रक्रिया प्रारंभ हो जाता है। सड़क में कई गैसें जैसे कार्बन डाईऑक्साईड, फार्मलडिहाइड, इथेनॉल आदि हानिकारक होते हैं जो हवा को प्रदूषित करती है तथा हवा में रोगाणु भी फैलाते हैं। इस प्रकार फूलों को तोड़ना पूर्णतः अवैदिक, आर्य समाज के नियमों के विरुद्ध है, पर्यावरण के हित में नहीं है तथा विज्ञान सम्मत भी नहीं है। जिस कार्य से किसी का अहित होता है, वह कार्य पापमय होता है अतः फूलों को तोड़ना पाप है और ऋषि द्वारा लिखा गया तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

8, पृष्ठ 265, समुल्लास 11 में–उत्तर–झूठी। क्योंकि उस मन्दिर में भी दिन में अन्धेरा रहता है। दीप रात–दिन जला करता है। जब जल की धारा छोड़ते हैं, तब उस जल में बिजली के समान दीप का प्रतिबिम्ब छलकता है, और कुछ भी नहीं। न पाषण घटे, न बढ़े, जितना का उतना रहता है। ऐसी लीला करके बिचारे निर्बुद्धियो को ठगते है।

विज्ञान के तथ्य–प्रकाश विज्ञान के ज्ञान से हम जानते हैं कि किसी वस्तु को देखने पर वह वास्तविक आकार को दिखाता है। यदि वस्तु के पहले कोई पारदर्शी शीशा आ जाय तब वस्तु छोटा या बड़ा एवं टेढ़ा मेढ़ा आदि दिखाई पड़ सकता है जो पारदर्शी शीशा के सीधा होने या बीच में 'दबा होने' या 'बीच में उभरा होने' पर निर्भर करता है जो प्रकाश के किरणों के आवर्तन परावर्तन होने पर निर्भर करता है जिसे हम दिन प्रतिदिन के जीवन में भी देखते रहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है। इसे स्वयं सत्यापित करने के लिए एक शीशे का ग्लास लीजिए। इसे किसी मेज़ आदि पर रखें। इसके पीछे कोई वस्तु रख दीजिए और ग्लास के द्वारा उस वस्तु को देखिए कि वह वस्तु कैसा दीखता है। अब ग्लास में जल भर दीजिये और वस्तु को देखिए वह भिन्न दिखाई देगा। अब वस्तु को देखते हुए धीरे–धीरे ग्लास को खिसकाइये अब वस्तु विभिन्न रूपों में दिखाई देगा। यह प्रकाश के किरणों के आवर्तन, परावर्तन होने के कारण होता है।

9, पृष्ठ 265, समुल्लास 11 में–उत्तर–झूठा–झूठा–झूठा। यह सब पोपलीला है। क्योंकि वह, मूर्ति का मुख पीला होगा। उसका छिद्र पृष्ठ में निकाल के, भित्ति के पार, दूसरे मकान में नल लगा होगा। जब पुजारी हुक्का भरवा, पेंचवान् लगा मुख में नली जमाके, परदे डाल, निकल आता होगा, तभी पीछे वाला आदमी मुख से खींचता होगा तो इधर हुक्का गड़–गड़ बोलता होगा। दूसरा छिद्र नाक और मुख के साथ लगा होगा। जब पीछे फूंकें मार देता होगा तब नाक और मुख के छिद्रों से धुआँ निकलता होगा। उस समय बहुतेरे मूढ़ो को धनादि पदार्थो से लूट कर धन रहित करते होंगे।

विज्ञान के तथ्य–हम सभी जानते हैं कि मिट्टी, धातुओं की मूर्तियाँ अंदर से खोखली यानी पोली बनाई जाती हैं। मूर्तियों के मुख और नाक में छिद्र बनाया जा सकता है तथा तली में छेद कर उसमें पाईप लगाकर जमीन के नीचे से ले जाकर पीछे के कमरे या परदे के पीछे जाकर उपरोक्त कार्रवाई सीधे–सीधे लोगों को मूर्ख बनाया जा सकता है जो विज्ञान व सामान्य ज्ञान से उचित है।

10, पृष्ठ 266, समुल्लास 11 में–''प्रश्न–देखो! सोमनाथजी पृथ्वी से ऊपर रहता था और बड़ा चमत्कार था, क्या यह भी मिथ्या बात है।

उत्तर– "हाँ मिथ्या बात है क्योंकि वह लोहे की पोली मूर्ति थी। नीचे–ऊपर चुंबक, पाषाण लगा रखे थे। उसके आकर्षण से वह मूर्ति अधर खड़ी थी।"

विज्ञान के तथ्य– हम सभी जानते हैं कि लोहे या अन्य धातु की पोली मूर्ति बहुत हल्की होती है। लोहे की मूर्ति को चुबंक अपनी ओर खींचता है तथा दो चुंबको के बीच एक लोहे की वस्तु या मूर्ति को इस प्रकार रखा जाय कि वह किसी भी चुंबक के पास न जा सके बल्कि वह एक स्थान पर स्थिर रहे। यह बात विज्ञान सम्मत एवं प्रत्यक्ष में करके देखा जा सकता है।

11, पृष्ठ 276, समुल्लास 11 में–''प्रश्न –ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है, सबको खा जाती है और प्रसाद देवें। तो आधा खा जाती और आधा छोड़ देती। –– (करीब 5 लाईन के बाद) –उत्तर–नहीं। क्योंकि वह ज्वालामुखी पहाड़ में से आग निकलती है। उसमें पुजारी पोपों की विचित्र लीला है। जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से व फूँक मारने से बुझ जाती है, थोड़ा सा घी को खा जाती है, शेष छोड़ जाती है, उसी के समान वहाँ भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाय, सब भस्म होता है, जंगल व घर में लग जाने से सबको खा जाती है।''

विज्ञान के तथ्य–हम सभी विज्ञान के भूगर्भ शास्त्र के ज्ञान से जानते हैं कि पृथ्वी की सतह मिट्टी, पत्थर के पहाड़ों के हैं तथा उसके नीचे जल, पत्थर का कोयला, पेट्रोलियम पदार्थों आदि के तह हैं और केन्द्र के आस पास अत्यंत उच्च तापमान के पिघले हुए पदार्थ तरल अवस्था में हैं तथा वर्तमान में कभी–कभी पृथ्वी की सतह फटकर बाहर फौव्वारे के रूप में निकलता रहता है जिसे हम ज्वालामुखी कहते हैं। यही उपरोक्त प्रश्न–उत्तर में लिखा है जो पूर्णतः भूगर्भ विज्ञान सम्मत है।

बघार बनाने को, चमचे में घृत आदि को 'मध्यम आँच' के अग्नि पर रखकर गर्म कर भूना जाता है। विज्ञान के अनुसार, गर्म करते समय घृत आदि का तापमान जब 160 से 260 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहता है, तब घृत आदि का अतिन्यून मात्रा भाप यानी वाष्प यानी वायुरूप में मूल सुगंधियों, गुणों के साथ हवा में फैलने लगती है। किसी कारण से जब अग्नि का तापमान 'उच्च' यानी 260 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक हो जाता है, तब घृत आदि का ज्वलन, दहन होने लगता है। इस दहन प्रक्रिया में पदार्थ के उड़नशील घटक वाष्प बनकर, ऊपर वायु में आते ही वायु के घटक ऑक्सीजन गैस से रसायनिक क्रिया कर, कार्बन डाईआक्साइड गैस, कुछ पानी भाप के रूप में एवं 'ज्वाला' यानी अत्याधिक उर्जा गर्मी एवं प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है, जिससे वातावरण में उष्मा एवं प्रकाश फैलती है। इस रसायनिक क्रिया होने के कारण घृत आदि की मात्रा घटती रहती है। ज्वाला यानी लौ के क्षेत्र में तापमान लगभग 300 से 3000 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो सकता है। ज्वाला बनने की प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक दहन हो रहे पदार्थ घटते–घटते समाप्त हो जाते हैं। अतः यह तथ्य विज्ञान सम्मत है एवं प्रत्यक्ष में करके देखा जा सकता है।

12, पृष्ठ 282, समुल्लास 11 में –''यह (ग्रहलाघव) का वचन और इसी प्रकार 'सूर्यसिद्धान्ति में भी है। अर्थात् जब सूर्य–भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब 'सूर्य ग्रहण' और जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच भूमि आती है तब 'चन्द्रग्रहण' होता है। अर्थात् चन्द्र की छाया भूमि पर और भूमि की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। सूर्य प्रकाशरूप होने से उसके सम्मुख छाया किसी की नहीं पड़ती है किन्तु जैसे प्रकाशमान सूर्य वा दीप से देहादि की छाया उल्टी जाती है, वैसे ही ग्रहण में समझो।''

विज्ञान के तथ्य–जब हम दिन में पृथ्वी पर चलते हैं तब हमारी छाया पृथ्वी पर पड़ती है। इसी प्रकार पेड़ो भवनों एवं पतंग उड़ाने पर तागा एवं पतंग की छाया पृथ्वी पर पड़ती है। इसी प्रकार जब सूर्य –भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ती है तब सूर्य का कुछ भाग हमें दिखाई नहीं देता है और सूर्य कुछ कटा–कटा दिखाई देता है जिसे हम गलती से मान लेते हैं कि सूर्य पर ग्रहण लग गया है। ऐसे ही जब सूर्य–चन्द्र के बीच में भूमि आती है तब चन्द्रमा का कुछ भाग, पृथ्वी की छाया से प्रकाशित नहीं हो पता है जिससे हमें चन्द्रमा कुछ कटा–सा दिखाई देता है जिसे हम 'चन्द्रग्रहण' कहते हैं। अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतयाः विज्ञान सम्मत है।

13, पृष्ठ 330 एवं 333, समुल्लास 12 में–"पदार्थ 'नष्ट' अर्थात् अदृश्य होते हैं परन्तु अभाव किसी का नहीं होता, इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिए। "–दो पृष्ठ के बाद तीसरे पृष्ठ पर...'जो वस्तु है, उसका अभाव कभी नहीं होता?

विज्ञान के तथ्य–रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान के 'पदार्थो के अविनाशिता के नियम' के अनुसार कोई पदार्थ न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है अर्थात् पदार्थ अविनाशी है। केवल उनकी अवस्थाएँ जैसे ठोस, द्रव्य और गैस यानी, वायुरूप में अदला बदला जा सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन पदार्थों में रसायनिक क्रिया कराके अन्य रसायनों में परिवर्तित किया जा सकता है जिसके गुण एवं व्यवहार बिलकुल भिन्न होते हैं। किसी भी पदार्थ का दहन होना, लोहे में जंग लगना,दूध से दही बनना, रासायनिक क्रिया होते है। अतः स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखा उपरोक्त तथ्य पूर्णतः विज्ञान सम्मत है।

ई. 5 चन्द्रा अपार्टमेंट,
115 कबीर मार्ग (निकट योजना भवन)
लखनऊ, उत्तर प्रदेश –226001
मो. 9451734531,
Email: vedpragupta@gmail.com

भूल सुधार

दिनांक 1 मार्च, 2020 के अंक में पृष्ठ संख्या 11 पर प्रकाशित आचार्य चैतन्यमुनि 'हिन्दी सुधा-निधि' की मानद उपाधि से सम्मानित समाचार प्रकाशित हुआ है। यह सम्मान राजस्थान के साहित्य मण्डल नाथद्वारा की ओर से दिया गया है।

अग्निहोत्र यज्ञ से आध्यात्मिक लाभों की प्राप्ति होकर जीवन स्वस्थ रहता है

● मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वरीय ज्ञान वेद में मनुष्यों को अग्निहोत्र यज्ञ करने की आज्ञा है। अग्निहोत्र यज्ञ में गोघृत व चार प्रकार के पदार्थों की आहुतियां यज्ञ में दी जाती हैं। यह चार पदार्थ गोघृत के अतिरिक्त सोमलता, गिलोय, गुग्गल, सूखे फल नारियल, बादाम, काजू, छुआरे आदि ओषधियां, मिष्ट पदार्थ शक्कर तथा सुगन्धित द्रव्य केसर, कस्तूरी आदि होते हैं। इन पदार्थों को मिलाकर बनाई गई सामग्री को अग्निहोत्र करते हुए वेद मन्त्रों को बोल कर आम्र आदि उत्तम समिधाओं की प्रचण्ड अग्नि में डाला जाता है। परिणाम यह होता है कि हुत द्रव्य जलकर अत्यन्त सूक्ष्म हो जाता है और वह अत्यन्त हल्का होने के कारण समस्त वायुमण्डल में सभी दिशाओं में फैल जाता है। यज्ञ में जो पदार्थ डाले जाते हैं वह सब मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये उत्तम होते हैं। इनका यज्ञाग्नि में सूक्ष्म रूप हो जाने से इनका प्रभाव अत्यन्त बढ़ जाता है। एक सूखी मिर्च को अग्नि में डालने पर जिस प्रकार उसके गुणों व प्रभाव में वृद्धि होती है जिसे हम नासिका से प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, उसी प्रकार से यज्ञ में आहूत द्रव्यों से भी मनुष्य के शरीर पर बाहरी व आन्तरिक सामान्य से कई गुणा अधिक प्रभाव होता है।

अग्निहोत्र देवयज्ञ में गोघृत व केसर एवं कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थों की गन्ध का ग्रहण तो नासिका से भली भांति होता है परन्तु अन्य पदार्थो के लाभों का ज्ञान व अनुभव अध्ययन, चिन्तन एवं अनुसंधानों से पता चलता है। अभी तक जितने भी याज्ञिक परिवारों से हमारा सम्पर्क हुआ है उन सबका स्वास्थ्य उत्तम है। वह साध्य एवं असाध्य रोगों से बचे हुए हैं। स्वस्थ रहने में यज्ञ तो सहायक होता ही है, लेकिन साथ ही साथ हमें अपने भोजन, व्यायाम, मन व आत्मा को भी शुद्ध विचारों एवं वेद आदि के स्वाध्याय एवं चिन्तन से पवित्र रखना होता है। यदि ऐसा करते हैं तो निश्चय ही हमारा यज्ञ हमें आध्यात्मिक लाभ प्रदान करने के साथ स्वस्थ रखेगा, रोगों से हमारी रक्षा होगी तथा हमारा लोक व परलोक भी इस पुण्य कार्य से प्रभावित होगा व निश्चय ही सुधरेगा भी।

सन्ध्या व यज्ञ की प्रेरणा व आज्ञा हमें वेद एवं हमारे ऋषियों के ग्रन्थों में प्राप्त होती है। यह आज्ञायें व निर्देश मनुष्यों की भलाई के लिये हैं। हमारे ऋषि मुनि स्वयं भी सन्ध्या, यज्ञ एवं तपस्या व पुरुषार्थ से पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इसका परिणाम ईश्वर का साक्षात्कार होता था। हमें भी अपने पूर्वज ऋषियों, उनकी आज्ञाओं सहित वेदाज्ञा का पालन पूर्ण श्रद्धा के साथ करना चाहिये। इससे हमारा मनुष्य जीवन धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सफल होगा। यदि हमें जीवन को श्रेष्ठ व लाभकारी बनाना है तो हमें अपने विद्वान ऋषियों यथा स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करना ही होगा।

हमारे देश में सृष्टि के आरम्भ से ही अग्निहोत्र यज्ञ करने की परम्परा विद्यमान है। महाभारत काल तक अनेक प्रकार के यज्ञ देश भर में हुआ करते थे जिनमें राजसूययज्ञ जैसे महायज्ञ भी सम्मिलित थे। इतिहास में अश्वमेध आदि अनेक यज्ञों का उल्लेख भी सुनने को मिलता है। इसका अर्थ हुआ कि देश व समाज की उन्नति के लिये किये जाने वाले सभी कार्य होते थे।

हम जो भी सत्य व ज्ञान से युक्त कार्य करते हैं वह यज्ञ ही होता है। यदि हम किसी दृष्टिहीन को सड़क पार करा देते हैं या किसी भूखे को भोजन करा देते हैं तो यह भी यज्ञ ही होता है। हर शुभकर्म यज्ञ होता है और प्रत्येक अशुभ–कर्म पाप व दुःख का हेतु होता है। **यज्ञ का शास्त्रीय मुख्य अर्थ देवपूजा, संगतिकरण एवं दान है। देवपूजा में विद्वानों का सम्मान करना तथा उनसे ज्ञान प्राप्ति उद्देश्य होता है। संगतिकरण में हमें लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर उनको अपने भ्रमरहित ज्ञान व अनुभवों को बताना व सिखाना तथा दूसरों से उन्हें सीखना भी होता है। यज्ञ का तीसरा अंग दान है। दान का अर्थ केवल भिखारियों व दीनों की सहायता करना या कुछ धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं को धन व द्रव्यों का दान करना ही नहीं होता अपितु दान के अनेक अर्थ हो सकते हैं। दान का अर्थ अपने स्वामित्व के पदार्थों का दूसरों के उपयोग के लिये देना होता है।**

निर्लोभी शिक्षक विद्या का दान करता है। युवक व युवतियाँ में समाज व देश के कल्याण के लिये जो सकारात्मक सहयोग व समय आदि के द्वारा उत्तम कार्यो को करते हैं वह उनका दान कहा जा सकता है। हमारे श्रमिक व कृषक भी अपने समय एवं पुरुषार्थ का दान करते हैं। उनके श्रम व तप के कारण ही सारा देश अपनी क्षुधा को दूर करता तथा अपने निवासों में सुख व चैन की नींद सोता है।

परमात्मा के बनाये सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, अन्न आदि पदार्थ अपने–अपने स्वत्व का हमारे लिये दान ही तो कर रहे हैं। जब आत्मा रहित जड़ पदार्थ दान कर सकते हैं तो हम मननशील ज्ञान व कर्म की शक्ति से युक्त सत्य व चेतन आत्मा वाले मनुष्य अपने दुर्बल व ज्ञानहीन बन्धुओं को उनकी आवश्यकता की वस्तुयें क्यों प्रदान नहीं कर सकते?

आर्यसमाज के पास ज्ञान का बल है। वह उसका वितरण ठीक प्रकार से नहीं कर पाया। देश के लोग जो ज्ञान व विद्या से वंचित हैं, वह भी आर्यसमाज से सद्ज्ञान व विद्या की प्राप्ति करने में संकोच व भीतर से आर्यसमाज का विरोध करते हैं। उनके आचार्यगण उनको आर्यसमाज से वेदज्ञान प्राप्ति के लिये प्रेरित न कर सद्ज्ञान से दूर रहने की प्रेरणा करते हैं। एक प्रकार से उन्हें आर्यसमाज का गलत चित्र प्रस्तुत कर उन्हें दूर रहने के लिये कहा जाता है।

हमारे अपने पौराणिक हिन्दू संगठन भी आर्यसमाज की मानवतावादी विचारधारा को अपनाने के स्थान पर अज्ञान व स्वार्थवश आर्यसमाज द्वारा प्रचारित ईश्वर के ज्ञान वेद के विचारों से दूर रहते हैं और आर्यसमाज के पुण्य व शुभ कार्य में सहयोग नहीं करते। **अतः यज्ञ को एक धार्मिक कृत्य ही न मानकर इसके विविध पक्षों को सम्यक रूप से जानना चाहिये और उसका उपयोग वायु, जल, पर्यावरण की शुद्धि सहित स्वस्थ एव निरोग समाज के निर्माण में करना चाहिये।**

यज्ञ व अग्निहोत्र देवयज्ञ से आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ में स्तुति–प्रार्थना–उपासना सहित स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मन्त्रों का विधान है। इनका उच्चारण यज्ञकर्ता को करना होता है। इनके उच्चारण व अर्थज्ञान से मनुष्य की आत्मिक वा आध्यात्मिक उन्नति होती है। वेद ज्ञान का पर्याय हैं। वेदज्ञान को प्राप्त कर उसके अनुरूप उपासना, सामाजिक, पारिवारिक व देशोत्थान के कर्म करने से मनुष्य को आध्यात्मिक लाभ भी प्राप्त होता है और जीवन में सुख व शान्ति भी मिलती है। हम ईश्वर से जो भी प्रार्थना करते हैं, उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारी **पात्रता के अनुरूप** पूरा करता है। हम ईश्वर से ज्ञानयुक्त बुद्धि मांगते हैं तो वह हमें मिलती है और नाना प्रकार के ऐश्वर्य भी मिलते हैं। वेद मंत्रों के अर्थ समझ कर किए गए उच्चारण से आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार की उन्नति होती है। अतः हमें प्रतिदिन अग्निहोत्र देवयज्ञ, परोपकार एवं परहित सहित देश व समाज की उन्नति के सभी कार्य करने चाहियें।

देश में अंग्रेजी व विदेशी अपसंस्कृति का प्रचार हो रहा है। आर्यसमाजी परिवारों के बच्चे व युवा भी इससे प्रभावित हैं। कितने बच्चे सन्ध्या व यज्ञ से जुड़े हुए हैं इसके लिये सर्वे कराया जा सकता है। बहुत कम परिवार ही ऐसे मिलेंगे जिनके परिवारों में मुख्यतः युवा पीढ़ी में वेद व आर्यसमाज के संस्कार देखने को मिलें। हम कल रात्रि एक मित्र परिवार के विवाह आयोजन में सम्मिलित हुए। उसमें पौराणिक संस्कार के अतिरिक्त सब कुछ विदेशी अपसंस्कृति से प्रभावित देखने को मिला जिसे देखकर अत्यन्त पीड़ा हुई। अतः इन सबके सुधार के लिये हमें राजनीतिक दलों व सामाजिक संगठनों में अपनी सहभागिता व उसके प्रभाव से ही कुछ परिवर्तन कराने होंगे। इसके लिये हमें यज्ञ के एक अंग **'संगठन'** पर भी ध्यान देना होगा। **असंगठित मनुष्य व समाज को यज्ञ से दूर ही कहा जा सकता है।** जहां यज्ञ होता है वहां लोग संगठित होते हैं व होने चाहियें।

यज्ञ में सब ब्रह्मा का अनुशासन मानते हैं। देश में भी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति महोदयों व संविधान का अनुशासन सबको मानना चाहिये लेकिन लोग इसके विपरीत चलते हुए दिखाई देते हैं। आर्यसमाज में उच्च–स्तर पर ऐसे तत्व हैं जिन्होंने अपनी आर्यसमाज विरोधी विचारधारा व कार्यो से समाज को कमजोर किया है। सभी लोग उनको जानते हैं परन्तु कोई उनके विषय में कहता कुछ नहीं है। ऐसे लोगों से सावधान रहने व उन्हें आर्यसमाज से अलग–थलग रखने की आवश्यकता है। वैसे वह अधिकांशतः पृथक ही हैं।

मनुष्य एवं प्राणीमात्र के अस्तित्व को प्रदुषण से बचाना एवं वायु, जल, पर्यावरण की शुद्धि आदि कार्यो के लिये देवयज्ञ अग्निहोत्र किये जाने की नितान्त आवश्यकता है। यज्ञ करने से मनुष्य को शुद्ध वायु, आरोग्य, ज्ञान व बल आदि की प्राप्ति होती है। ईश्वर से भी मित्रता होकर उसका सहाय मिलता है। मनुष्य का मन व बुद्धि शुद्ध व पवित्र होती है। वह देश व समाज विरोधी कार्यो में संलग्न नहीं रहता अपितु समाज के संवर्धन में योगदान करता है। यज्ञ अनेकानेक लाभों को देता है। हमारा लोक व परलोक यज्ञ करने से बनता है।

महात्मा प्रभु आश्रित जी ने यज्ञों को अत्यन्त लोकप्रिय किया था। आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार जी की यज्ञ मीमांसा पुस्तक भी पढ़ने योग्य है। सभी यज्ञकर्ताओं को यज्ञ के सभी मन्त्रों के अर्थो पर दृष्टि डालते रहना चाहिये।

ऋषि दयानन्दकृत वेदभाष्य व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय मनुष्य की आत्मा को पवित्र करता, ईश्वर से जोड़ता व ईश्वर साक्षात्कार कराने में उपयोगी प्रमुख साधन है। स्वाध्याय एवं अभ्यास से मनुष्य ईश्वर को जानता व प्राप्त करता है। उसका जीवन सफल होता है। अतः हमें यज्ञ के महत्व को जानकर प्रतिदिन अग्निहोत्र देवयज्ञ अवश्य करना चाहिये और अपने जीवन को वेदमय और सत्यार्थप्रकाशमय बनाना चाहिये।

196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोनः 9412985121

पत्र/कविता

दयायाचना का प्रावधान समाप्त किया जाए

पूर्व सी.एम. बेअंत सिंह के हत्यारे को फाँसी की सजा उम्रकैद में बदलने के संदर्भ में जब रक्षक ही बम धमाके करने लगे तो जनता की सुरक्षा कौन करेगा? और कैसे होगी? सी.बी.आई. की विशेष अदालत के निर्णय का क्या महत्व रह गया? जिस बम धमाके में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री बेअंत सिंह और 16 अन्य लोग मारे गए थे। क्या दोष था उनका?

एक पुलिस कांस्टेबल द्वारा 17 व्यक्तियों को मारना जघन्य और घोर निन्दनीय अपराध है। ऐसे अपराधी को मौत की सजा (फांसी) नहीं मिलेगी तो किसे मिलेगी। राष्ट्रपति द्वारा फांसी की सजा को उम्र कैद में बदलना उचित नहीं है। हमारी मांग है कि दया याचना का प्रावधान समाप्त किया जाए। सर्वोच्च न्यायालय–सी. बी.आई. की विशेष अदालत का निर्णय ही अन्तिम माना जाय अन्यथा जघन्य अपराध बढ़ते ही रहेंगे।

डा. गिरीश चन्द्र गुप्त
123 देवीपुरा–II कृष्ण नगर,
बुलन्दशहर, उ.प्र.डॉ वेदप्रताप वैदिक

****

नेता फिर गलती कर रहे हैं

पृथ्वीराज चौहान ने दुश्मन को 17 बार क्षमा दी थी जबकि दुश्मन ने एक बार भी माफ नहीं किया। चौहान की गलती के कारण देश 756 साल तक गुलाम रहा। उस अवधि में हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार हुए।

1947 में दुश्मन को देश विभाजित करते हुए भयंकर हिंसक घटनाएं घटित करने में जरा भी शर्म नहीं आई। हिन्दु नेता फिर भी उदार बने हुए हैं और मार खा रहे हैं। जनता मृत प्रायः बनी हुई है।

सुभाष कश्यप ने गलत लिखा है कि संसद तथा विधान मंडलों में अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण दिया हुआ है।

अल्प संख्यकों को विशेष अधिकार–अवसर देना पूरी तरह से अनुचित और गलत है जिसका परिणाम भोगना पड़ेगा।

हमारी मांगें हैं कि (अ) सिख–बौद्ध–जैन को अल्प संख्यक नहीं माना जाए (आ) अल्प संख्यकों को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनने पर प्रतिबंधित किया जाए। क्योंकि इनका जन्म भारत में ही हुआ है।

डॉ. अम्बेडकर ने 1949 में स्वयं कहा था कि यह नेहरू द्वारा बनवाया गया संविधान उत्तम नहीं है फिर इसकी प्रशंसा क्यों की जाती है।

इन्द्र देव गुलाटी
18/186, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर (उ.प्र.)

****

कहाँ ढूँढते हो तुम उसको

कहाँ ढूँढते हो तुम उसको बाहर के सांसार में,
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।
इस धरती पर उसे खोजते कितनी दूर चले जाओ,
नहीं मिलेगा किसी ठौर पर चाहे खुद को तड़पाओ,
कण–कण में वह व्याप्त हो रहा सृजन और संहार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

नहीं मिलेगा मूर्ति में वह कितना करो चढ़ावा तुम,
नहीं मिलेगा नाच–गान में कर लो शोर शराबा तुम,
सोना–चाँदी–रत्न समर्पण द्वारा न मनुहार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

बाहर की जब चीज़ नहीं वह, व्यर्थ ढूँढते क्यों बाहर?
जड़ को चेतन मान–मानकर व्यर्थ पूजते क्यों पाथर?
वेदमार्ग पर नहीं चलोगे तब तक न दीदार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

विषय नहीं व बाह्येन्द्रिय का, चमक–दमक में दिखे नहीं,
एक–एक कण भले निहारो नहीं मिलेगा ईश कहीं,
चक्कर भले लगाओ किसी भी बाबा के दरबार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

जब तक सच्चे योगमार्ग पर कदम नहीं बढ़ाओगे,
याद रखो उस परम प्रभु को सपने में भी पाओगे,
योगिक जीवन द्वारा चिन्तन कर आचार–विचार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

एकछत्र जब भूमंडल पर राज्य कभी था आर्यों का,
सारा विश्व प्रशंसक था उन ईश्वरपुत्र के कार्यों का,
एक ओ३म् आराध्य देव, विश्वास रहा निराकार में।
कभी नहीं वह मिल सकता, है दुनिया के बाजार में।

आओ उसको हृदय में खोजे चलें योग के मार्ग पर,
ध्यान, धारण, चिंतन द्वारा उसका साक्षात्कार कर,
ईश्वर कभी नहीं मिल सकता अविद्या–अन्धकार में।

ओम प्रकाश आर्य
आर्य समाज रावतभाटा राजस्थान–323307

वो पूनम की पाठशाला है

भरे भण्डार भोजन के वो अक्षय पाठशाला है।
ऋचाएं वेद की गूंजें हमारी यज्ञशाला है।
इस संसार सागर में कभी जब डगमगाते हैं।
जहाँ मन शान्त होता है वो पूनम की पाठशाला है।।

विरोधी देख थर्राते वह राणा का भाला है।
स्रोत आनन्द से पाया वो पूनम का उजाला है।
भटकते लड़खड़ाते जब कभी हम गिरने लगते हैं।
दिशा निर्देश जहां मिलता वो पूनम की पाठशाला है।

हमारे नैतिक मूल्यों पर लगा सदियों से ताला है।
तिमिर की काली छाया ने बंद किया उजाला है।
डी.ए.वी. आर्यों में पुनर्ज्योति जगी जिससे।
वो पूनम की पाठशाला है, वो पूनम की पाठशाला है।

डॉ. प्रमोद योगार्थी
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

जब 1947 में मैंने गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के दर्शन किए

बात 1947 की है जब हिन्दुस्तान, पाकिस्तान का विभाजन हो चुका था। दोनों तरफ मारा काटी हो रही थी। जहाँ आसफ अली रोड़ नई दिल्ली है, कभी यहाँ एक बड़ा नाला हुआ करता था। मैं उसम समय 11 वर्ष का था। अब मैं 84 वर्ष को हो गया हूँ।

हम उस समय अजमेरी गेट सीता राम बाजार में रहते थे। रामलीला मैदान हमारे घर के पास होने के कारण मैं प्रायः गिल्ली डंडा खेलने जाता था। अचानक मैंने देखा कि कुछ लोग जमा थे। मैंने उस समय बनियान कच्छा पहन रखा था। मैं भी भीड़ में शामिल हो गया। वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि गृहमंत्री सरदार पटेल को लेकर तत्कालीन पुलिस कमिश्नर रंधावा जीप पर लेकर आए थे। सरदार पटेल बहुत धीमी आवाज में जनता को संबोधित करते हुए कह रहे थे कि मुसलमान भी हमारे भाई हैं। उन्हें मत मारो। हाँ यदि ये कंकड़ मारें तो तुम भी पत्थर मारो। यह वाक्य मैंने सुना था। इतना कहने के बाद श्री रंधावा उन्हें तेज़ी से ले गए। भीड़ में चर्चा होने लगी। दिल्ली में हिन्दु–मुसलमानों में मारा मारी होने लगी। हमारे मकान की दीवार और मुसलमानों की दीवार मिली हुई थी। प्रेम से रहते थे कभी झगड़ा नहीं होता था। अब एक दूसरे की जान के प्यासे हो गये थे ।

मामचन्द रेवाड़िया एसी–23 टैगोर गार्डन
नई दिल्ली–27

आर्य समाज वसंत कुञ्ज द्वारा ऋषि दयानन्द बोध उत्सव

ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म व बोध उत्सव आर्य समाज भवन, आर्य समाज मार्ग, सेक्टर बी 2, वसंत कुंज में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्र से बड़ी संख्या में स्त्री, पुरूष, युवा व बच्चे शामिल हुये।

कार्यक्रम का आरम्भ हवन से हुआ। समाज के पुरोहित अंकित आर्य ने समाज की यज्ञशाला में हवन को संपन्न करवाया। हवन के पश्चात् स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों पर व्याख्यान देते हुये अशोक श्रीवास्तव ने वैदिक शिक्षा के माध्यम राष्ट्रीयता के विकास में ऋषिवर के योगदान की चर्चा की और उसके बाद मनमोहक व प्रेरक भजन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर प्रधान, कमांडर पी. सी. बक्शी ने इस आर्य समाज के क्रमिक विकास की संक्षिप्त जानकारी देते हुये युवाओं से अपील की कि वे आर्य समाज वसंत कुंज के कार्यकलापों में और अधिक सक्रिय हों। साथ ही उन्होंने क्षेत्र के निवासियों से इस आर्य समाज के लिये उदारता पूर्वक दान देने की अपील की जिससे इस समाज की संरचना और गतिविधियों का और अधिक विस्तार किया जा सके।

केन्द्रीय सभा दिल्ली ने दिल्ली स्थित सरकारी विद्यालय में छात्रों को बांटी स्टेशनरी

आर्य समाज दिल्ली एवं राजस्थान के पदाधिकारियों द्वारा नई दिल्ली स्थित जनकपुरी के प्राईमरी विद्यालय में शिक्षण सामग्री वितरित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के मंत्रों के साथ हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्या निधि सक्सैना द्वारा आगंतुक अतिथियों का पीत वस्त्र पहनाकर स्वागत किया गया।

राजस्थान के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को मन लगाकर ग्रहण करें और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएं। केंद्रीय सभा के महामंत्री सतीश चड्ढा ने कहा कि विद्या वह धन है जिसे अन्य कोई चुरा नहीं सकता है। संसार में जो दूसरे प्रकार के धन होते हैं उसे कोई दूसरा चुरा सकता है, छीन सकता है, किंतु विद्या रूपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, इसे जितना खर्च करेंगे ये उतना ही बढ़ता चला जाएगा। इसलिए जीवन को विद्यावान बनाएं।

विद्यालय प्रशासन द्वारा छात्रों को स्टेशनरी उपलब्ध कराने पर आभार व्यक्त किया गया।

कोटा में मनाया गया ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज कोटा द्वारा शिवरात्रि के अवसर पर आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद का बोधोत्सव पर्व मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती वेदोद्धारक एवं युग प्रवर्तक महान् व्यक्तित्व थे। शिवरात्रि के अवसर पर हुए बोध ने उन्हें परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानने के लिए प्रेरित किया। वे आत्मज्ञान प्राप्त करते हुए आधुनिक काल में वैदिक ज्ञान के पुरोधा बने। कार्यकम में आर्य विदुषि डॉ. ज्योति आर्या ने वैदिक संस्कृति के प्रमुख तत्व यज्ञ पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यज्ञ में प्रार्थना के माध्यम से ध्यान शक्ति बढ़ती है।

इस अवसर पर जिला परिषद कोटा के अधिशाषी अभियंता दिनेश पारेता ने महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा सती प्रथा, नशामुक्ति एवं नारी शिक्षा के लिए किए गए सुधारवादी कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होनें समाज से बुराई हटाने का कार्य किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक देवयज्ञ पूर्वक हुआ। आचार्य अग्निमित्र के पौरहित्य में उपस्थित जनों ने वेद मंत्रोच्चार पूर्वक यज्ञ में आहुतियां दी।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर ...

बधाई दी तथा छात्राओं को महर्षि दयानंद के जीवन से परिचित कराते हुए कहा कि सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ही थे जिन्होंने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की आवाज़ उठाई थी। आपने छात्राओं को आर्यसमाज की तथा महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

श्री सुदर्शन कपूर ने स्वामी जी की जीवनशैली पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्होंने उस समय संसार में फैली कुरीतियों जैसे बाल विवाह, स्त्री शिक्षा पर प्रतिबंध, धर्म के नाम पर फैले झूठे आडम्बरों को दूर किया।

संगीत विभाग द्वारा सुन्दर भजन ओ३म् भजो सब प्राणी मिलकर ओ३म् भजो की प्रस्तुति की गई जिससे सारा वातावरण आनंदित हो उठा।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 11/12-03-2020

दरबारी लाल डी.ए.वी. पीतमपुरा ने परीक्षार्थियों को दी शुभकामनायें

दरबारी लाल डीएवी मॉडल स्कूल एन. डी ब्लॉक पीतमपुरा में बोर्ड परीक्षा के लिए जाने वाले विद्यार्थियों के लिए आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अंतर्गत विद्यालय के प्रांगण में भव्य यज्ञ आयोजित हुआ है। बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सामूहिक मंत्रोच्चारण द्वारा श्रद्धा पूर्वक यज्ञ में आहुति दी। प्रार्थना उपासना के मंत्रों के साथ–साथ मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक बल हेतु प्रार्थना की गई व भजन गाए गए।

यज्ञ के उपरांत प्रधानाचार्या द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरक वचन कहे गए। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी गईं व स्वस्तिवाचन के अंतर्गत प्रधानाचार्या व अन्य अध्यापिकाओं द्वारा विद्यार्थियों पर पुष्प वर्षा भी की गई।

कक्षा बारहवीं के अतिरिक्त कक्षा दसवीं व आठवीं हेतु भी अलग से यज्ञ का आयोजन हुआ व बोर्ड परीक्षा हेतु उन्हें भी शुभकामनाएँ दी गई। स्वस्तिवाचन के साथ–साथ उन पर पुष्प वर्षा भी की गई।

सोहन लाल डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल के प्रांगण में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव मनाया गया

सोहन लाल डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल के प्रांगण में स्वामी दयानन्द जी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में यज्ञ व भजन का आयोजन किया गया। अध्यापिका श्रीमती सुरेश ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन व उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया। कविता पाठ हुआ व विशाखा और नीशू ने मधुर वाणी से ऋषि महिमा गायन किया– भजन के बोल (ऋषि दयानन्द जी के गाथा गाते हैं) ने सबका मन मोह लिया।

दयानिधि शास्त्री ने भी अपने भजन में माध्यम से स्वामी दयानन्द जी के विचारों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्थानीय प्रबन्धक समिति के सदस्य श्री अनिल गुप्ता जी मुख्य अतिथि के रुप

में उपस्थित रहे। उन्होंने डी.ए.वी. संस्था को उच्चकोटि की संस्था बताया कि इन संस्थानों से हजारों बच्चों को शिक्षा प्राप्त होती है व प्रतिवर्ष बच्चे उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

प्राचार्या श्रीमती नीलम मलिक ने बच्चों को स्वामी दयानन्द जी की सेना बताया। साथ ही डी.ए.वी. संस्था के बारे में बताया व बच्चों को आने वाली परीक्षा में अच्छे अंकों को प्राप्त करने के लिए स्कूल का व अपने माता–पिता के नाम को रोशन करने के लिए प्रकाश डाला व बच्चों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

डी.एल.डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, शालीमार बाग ने सात कुंडीय हवन के द्वारा विद्यार्थियों को दी शुभकामनाएँ

डी.एल.डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, शालीमार बाग में कक्षा 10वीं और 12वीं के छात्रों को परीक्षा में सफल होने की शुभकामना देने हेतु सात कुंडीय हवन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रीना राजपाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें जीवन में सफलता व अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और उनके शुभ जीवन हेतु मंगल कामना की। उन्होंने सब छात्रों को मन लगाकर

पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया व साथ ही साथ छात्रों को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय का सदुपयोग कर परीक्षा की तैयारी करने की युक्तियाँ बताईं।

विद्यार्थियों ने ध्यान केंद्रित करके पढ़ने की तथा वैदिक नियमों को अपनाकर जीवन में सन्मार्ग पर चलने की शपथ ली। हवन के द्वारा संपूर्ण अध्यापक वर्ग ने अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की तथा आशीर्वाद स्वरुप उन पर पुष्प वर्षा की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**